



मदुरैल पत्रिका



मार्च 2022 अंक-50

हिंदी अनुभाग, मदुरै मंडल, दक्षिण रेलवे



भारत सरकार GOVERNMENT OF INDIA

रेल मंत्रालय Ministry of Railways

दक्षिण रेलवे Southern Railway

पी.अनंत P.ANANTH
मंडल रेल प्रबंधक
Divisional Railway Manager

मंडल कार्यालय, Divisional Office,
मदुरै मंडल Madurai division,
मदुरै Madurai – 625 016.
Phone/Fax: 0452-2308000

संदेश

मदुरै मंडल के मदुरैल पत्रिका का विमोचन नियमित अवधि में हो रहा है। मदुरै जैसे दक्षिण क्षेत्र से लगातार प्रकाशित होना ही एक उपलब्धि है। उसमें भी मैंने देखा कि अधिकांश तमिल भाषी अपना योगदान दिये हैं।

ई-पत्रिका के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। सबको डिजिटल माध्यम से वितरित किया जाएगा। इस भव्य प्रकाशन के लिए मैं मदुरै मंडल के हिंदी विभाग को साधुवाद देता हूँ।

पाठकों से निवेदन है कि अपनी प्रतिक्रियाएँ भेजें ।

शुभकामनाएँ

(पी.अनंत)



भारत सरकार GOVERNMENT OF INDIA
रेल मंत्रालय Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे Southern Railway

त.रमेशबाबु T.RAMESH BABU
अपर मंडल रेल प्रबंधक
ADDL. Divisional Railway Manager

मंडल कार्यालय, Divisional Office,
मदुरै मंडल Madurai division,
मदुरै Madurai – 625 016.

संदेश

आज का युग डिजिटल युग है। दूरियाँ कट गयी हैं। वास्तव में “वसुधैव कुटुम्बकं” हो गया है। परिवर्तन के साथ-साथ अपने को परिवर्तित करनेवाला ही आगे बढ़ता है। Today's era is digital age. Distances have been cut. In fact it has become "Vasudhaiva Kutumbakam". Along with the change, who changes himself to move forward.

मूल सोच ही आज की परिसंपत्ति है। भाषा एवं संप्रेषण की आवश्यकता चिरकाल तक रहेगा। अच्छे विचार की एक चिंगारी पर्याप्त है जो जीवन को भी बदल देता है। Original thinking is the asset of today. The need for language and communication will last forever. One spark of a good thought is enough to change a life.

आशा है कि ऐसे मूल सोच से भरा यह ई-पत्रिका पाठकों को भाएगा। Hope this e-magazine full of such original thinking will be liked by the readers.

शुभकामनाओं के साथ with best wishes

RAMESH
BABU
THANNEERU
Digitally signed by
RAMESH BABU
THANNEERU
Date: 2022.03.18
13:42:41 +05'30'
(त.रमेश बाबु)



भारत सरकार GOVERNMENT OF INDIA

रेल मंत्रालय Ministry of Railways

दक्षिण रेलवे Southern Railway

ए.श्रीनिवासन A.SRINIVASAN

राजभाषा अधिकारी

RAJBHASHA ADHIKARI

मंडल कार्यालय, Divisional Office,

मदुरै मंडल Madurai division,

मदुरै Madurai – 625 016.

संदेश

पत्रकारिता का रूप बहुत बदल चुका है। डिजिटल पत्रकारिता की बात ही सर्वत्र है। कल की बात बासी कहते थे और आजकल घंटों के पहले की बात बासी हो जाती है। इतना संचार माध्यम आ गया है कि तत्काल ही वह समाचार दूर-दूर तक पहुँच जाता है।

समाचार दूसरी बात है और साहित्य उससे बिल्कुल भिन्न है। समाचार सीमित लोगों के लिए काम आ सकता है जबकि सच्चा साहित्य आदमी को मानसिक आनंद प्रदान करने के साथ-साथ जीवन में उच्चतर स्थान तक पहुँचाता है।

इस अंक के रंक से कुबेर की कहानी हो या प्रयोजन मूलक हिंदी - जरूर पाठकों को आकर्षित करेगा और बार-बार पढ़ने को प्रेरित करेगा।

ई-पत्रिका होने के कारण पन्नों का फिक्र नहीं है। वैसे सौ पृष्ठ तक की सामग्री आने पर भी हमने 75 पृष्ठ तक प्रतिबंधित कर दिया और अगले अंक में बाकी छपेगा। इस अवसर का लाभ उठाकर मदुरै के कर्मचारियों को उनके योगदान के लिए अपना आभार प्रकट कर लेता हूँ।

अगले अंक को तकनीकी विषयों के विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने का निश्चय हिंदी विभाग ने किया है। मेरी उम्मीद है कि उसके लिए भी सदा की तरह लेखों का भरमार होगा।

अगले अंक के जरिए मिलने तक आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में.....


(ए.श्रीनिवासन)

दक्षिण रेलवे

मदुरै मंडल

संरक्षक

श्री प.अनंत
मंडल रेल प्रबंधक

मार्गदर्शक एवं सलाहकार

श्री त.रमेश बाबु
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक

संपादक

श्री ए.श्रीनिवासन
राजभाषा अधिकारी

उप संपादक

सुश्री एल.मुत्तुलक्ष्मी,
वरि.अनुवादक
श्री सचिन सुमार सिंह,
अनुवादक

टंकण एवं प्रस्तुति

सुश्री बी.वेण्माल, मुख्य टंकक

अन्य सहायता

श्री आर.सैतिल कुमार
हिंदी अनुभाग

इस पत्रिका में प्रकाशित
सामग्रियों के विचार लेखकों के
अपने हैं, यह आवश्यक नहीं है
कि संपादक इनसे सहमत हो।

अनुक्रमणिका

मंडल रेल प्रबंधक का संदेश

अमुराधि एवं अमंरेप्र का संदेश

संपादकीय

1. तिरुवेडगम् - एक तीर्थ यात्रा- ए.श्रीनिवासन, राधि
2. रंक से कुबेर- डॉ महेश्वरी रंगनाथन, सेवानिवृत्त वराधि/चेन्नै
3. सुमित्रानन्दन पन्त की बिम्ब रचना - सचिन कुमार सिंह,
अनुवादक
4. रामचन्द्र शुक्ल - एल.मुत्तुलक्ष्मी, वरि.अनुवादक
5. हिन्दी भाषा शिक्षण में व्याकरण का स्थान-
बी.वेण्माल, मुख्य टंकक
6. स्मृति के पल- माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी
7. क्या आप जानते हैं?- एन.एस.वीणा, वरिष्ठ लिपिक/
कार्मिक शाखा
8. भारत: एक नजर- एन.एस.वीणा, वरिष्ठ लिपिक/कार्मिक शाखा
9. भारतीय रेलवे क्षेत्रों के मुख्यालय - एन.एस.वीणा, वरिष्ठ
लिपिक/कार्मिक शाखा
10. कैसे जीना है?- पी.सुन्दररामन
मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक/मदुरै जंक्शन
11. मदुरै मंडल में देखने लायक स्थान - एस.श्रीनिवासन
व.अनुवादक/ तिरुच्चि मंडल
12. प्रयोजनमूलक हिंदी की नवीन दिशाएं - सुनिल राम
स्टे.अधी/तूतुक्कुडि
13. तमिलनाडु में हिंदी का इतिहास - पी.सुन्दररामन
मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक/मदुरै जंक्शन
14. मैं हिंदी हूँ - सचिन कुमार सिंह, अनुवादक
15. प्रकृति का प्रकोप - विनय कुमार चौरासिया, व.लिपिक,
संकर्म शाखा/मदुरै
16. हिंदी अनुभाग-मदुरै के कार्यान्वयन के कुछ झलकियाँ

संपर्क - राजभाषा अनुभाग, मंडल कार्यालय, दक्षिण रेलवे, मदुरै तमिलनाडु - 625016

फोन - 72045

तिरुवेडगम् - एक तीर्थ यात्रा

श्री ए.श्रीनिवासन

राजभाषा अधिकारी

मदुरै मंडल

बहुत सोच-विचार कर तीर्थ यात्रा सभी करते हैं, मैं भी करता हूँ, किया हूँ। पर कभी-कभार अचानक कहीं पर जाने का, और वह स्थान पसंदीदा हो जाने का आनंद ही अलग है। कुछ वर्ष पहले मदुरै आया था। जिस रिश्तेदार के यहाँ शामको चार बजे गया तो वे कहीं बाहर चले गये थे और बताये थे कि रात सात बजे तक आ जाएँगे और वही रुकने के लिए कहे थे। पूरे दिन के लिए मैंने किराये पर गाडी ली थी इसलिए यों ही घूमने के लिए निकल पड़ा। पहले पळमुदिरचोलै ही जाने का निश्चय किया और बाद में ड्राइवर ने बताया कि शोलवंदान में सुप्रसिद्ध शिव मंदिर है। तो मैंने बताया कि ठीक है, वहीं चलो।

सोने में सुगन्ध जैसे रास्ते भर रमणीय दृश्य है। शहर के इतने पास कैसे इतनी हरियाली? घुमावदार रास्ते पर जाते-जाते इतना अच्छा लगा कि निश्चय कर लिया कि बिना मोल-भाव करके ड्राइवर जो चाहे दे दूँगा!!

इस पुण्य तीर्थ-स्थान मदुरै-शोलवंदान के रास्ते में 17किमी की दूर पर स्थित है। शोलवंदान रेलवे स्टेशन से लगभग 5किमी की दूरी पर है। पास ही वैगै नदी बहती है। इस तीर्थ स्थान की प्रशंसा में कई गीत रचे गये हैं। जैन का पतन और शैव का उत्थान के यह प्रमुखस्थान रहा। धर्म और तमिल साहित्य इस स्थान पर एक साथ बढ़ा। यह स्थान मूर्ति, स्थल, तीर्थ -तीनों के लिए मशहूर है।

पाण्ड्य राजाओं द्वारा से इस मंदिर का पुनरुद्धारण, रखरखाव आदि हो रहा था। उसके बाद चेट्टीनाड, देवकोट्टे के लोग इस मंदिर के लिए कई वाहन बनाने और उत्सव मनाने के लिए असीमित दान दिये थे। सुना था कि 1930 के बाद मेय्यप्प चेट्टियार, सेवुकन चेट्टियार ने लाखों में दान देकर पुनः पुनरुद्धारण किया है। परिसर की दीवार जो इन लोगों ने बनाया है - इतनी लंबी, इतनी चौड़ी - देखने योग्य है। यह मंदिर - शिल्प कला का एक अद्भुत उदाहरण है। मंदिर के मंडप के बड़े-बड़े स्तंभ, उसमें रचे गये शिल्पकला-द्योतक मूर्ति देखनेवाले सभी को आश्चर्य चकित कर देता है। यह भी सुना कि यद्यपि उसी परिवार के लोग सेवा कर रहे हैं फिर भी आधिकारिक रूप से आजकल तमिलनाडु सरकार की देखरेख में है।

वैगै नदी के प्रवाह के कारण इस मंदिर का परिसर भी हरी-भरी है। विभिन्न तरह के पेड़-पौधे, पुष्पित-लता, भौरों से भरा मधु, हर कहीं नारियल का पेड़ होने के कारण रास्ते भर नारियल पानी बेचनेवाले समूह, बंदरों का झुंड जो, जो भी दे, खाने को तैयार, विभिन्न प्रकार के पक्षी.....। सौन्दर्य भरे प्रकृति से घिरा यह मंदिर अनुपमेय है।

मंदिर में प्रवेश करने के पहले वैगै नदी के तट पर स्थित गणपति जिसे **तटस्थ (तट/किनारे पर स्थित) विनायक** कहते हैं का दर्शन करना है। कहा जाता है कि इन्होंने ही नदी के बहाव के विपरीत दिशा में आई और जा रही पत्र को (पुराने जमाने में पत्र में ही लिखते थे जिसे तमिल भाषा में **एडु** कहा जाता है) रोककर सावधानी से तट पर लाकर उसकी रक्षा करने हेतु चारों दिशाओं में चार मछली को रक्षक के रूप में रखे थे। फिर सावधानी से उस एडु/पत्र को ऊपर लाये थे। इस वास्ते से भी एक अलग छोटा सा मंदिर तट पर ही बनाया गया है और विनायक वहीं से अपना आशीष देते हैं।

मंदिर के प्रमुख द्वार पर जाएँगे तो वहाँ अधूरी गोपुरम् को देख सकते हैं। कहा जाता है कि यह गोपुरम् विजयनगर सम्राटों ने बनाना शुरू किया। तब के मुसलमान शासक बार-बार आक्रमण करते थे और तंग करते थे। इस गोपुरम को पूरा कर नहीं पाये थे। इस द्वार पर प्रवेश करने पर मंदिर के प्रधान मंडप को देख सकते हैं। नायक महाराजाओं की पद्धति के अनुसार बाईं ओर विनायक और दाईं ओर स्कंध/मुरुगन का दर्शन कर सकते हैं। आगे जाएँगे तो **भद्रिका परमेश्वर** जिन्हें **एडगनाथ(र)** भी कहते हैं - शिव जी का दर्शन कर सकते हैं। शिव जी के परिसर में सभी शिव मंदिरों की तरह 63 नायनमार, दक्षिणामूर्ति, सप्तमाता, दुर्गादेवी, चंडिकेश्वर आदि का दर्शन कर सकते हैं। पास ही नवग्रह सन्निधि भी है। ध्यान देने की बात यह है कि सभी शिव मंदिरों की तरह यहाँ भी **ध्वज स्तंभ** है पर ब्रह्मोत्सव नहीं मनाया जाता है।

यहाँ के स्तंभ में एक गणपति है जो सुप्रसिद्ध है और इन्हें देखने के लिए और अपनी प्रार्थना सुनाने के लिए दूर-दूर से आते हैं। गणपति का नाम है **सेवि साय्त विनायक**। जिसका अर्थ है प्रार्थना सुननेवाले विनायक। शादी के निमंत्रण पत्र से लेकर, पुंसुवन पत्रिका, बेटे का जनेऊ पत्रिका, नामकरण आदि पत्रिका का भरमार वहाँ देख सकते हैं। अपनी-अपनी प्रार्थना पूरी होने पर! कृतज्ञता ज्ञापन के रूप में! इस विनायक का निमंत्रण करते हैं !! आश्चर्य की बात यह है कि पहले केवल उसके कान में प्रार्थना करके चले जाते हैं और प्रार्थना पूरी होने के बाद ही कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

दाई ओर सुगंध कुंतलाम्बाळ है + जिन्हें एरवारकुळलि अम्मन भी बुलाते हैं। इनके परिसर में इच्छा, क्रिया, ज्ञान शक्तियों की देवियाँ हैं।

यहाँ एक नंदवन भी है। मंदिर के बाहर एक गाय-सेवन स्थान है। भक्तजन कुछ-न-कुछ गाय के लिए देते हैं। इसके लिए विशेष दुकान हैं जो केवल गाय के खाने योग्य चीजें बेचते हैं।

इस मंदिर का इतिहास बताता है कि इस तिरु एडग भगवान को ब्रह्मा, पराशर, व्यास भगवान आदि ऋषियों ने, कई राजाओं ने, तिरुज्ञान संबंधर ने प्रार्थना एवं सेवन कर कई वर पाये हैं। यह भी कहा गया है कि यहाँ आना काशी जाने के समतुल्य पुण्य देता है। विष्णु, गरुडभगवान, आदिशेष, सातनार आदि चारों ने इस शिव जी की पूजा किये हैं। तिरुविलैयाडर पुराणम में इस क्षेत्र की महिमा गाया गया है।

यहाँ पर दो तीर्थ हैं - ब्रह्म तीर्थ एवं वैगै तीर्थ। यहाँ वैगै नदी काशी के गंगा जैसे ही दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है।

यहाँ के पाण्ड्य राजा शैव धर्म से जैन धर्म में अपने को परिवर्तित कर लिया। पाण्ड्य महादेवी रानी को बहुत दुख हुआ। शिव से तहे दिल से प्रार्थना की कि राजा को फिर से शैव मार्ग में लौटा दें। तिरुज्ञान संबंधर से भी अनुरोध किया। तिरुज्ञान संबंधर समय अपने लिए विपरीत होने के बावजूद वहाँ पधारे थे। जैन धर्मावलंबियों ने उनके पडाव पर आग लगाये थे। तिरुज्ञान संबंधर पर शिव जी से प्रार्थना की तो वह आग जठराग्नि रोग बनकर पाण्ड्य राजा को सताने लगा। कई चिकित्सा देने के बाद भी वह ठीक नहीं हुआ। तब किसी ने बताया कि तिरुज्ञान संबंधर इस बीमारी को दूर करा सकते हैं। पाण्ड्य राजा ने भी बताया कि यदि वे इस बीमारी को दूर कर देते हैं तो मैं फिर से शैवमत पर आ जाऊँगे। विभूति/अस्ति लगाकर उनके रोग को दूर किया और पाण्ड्य राजा ने शैव की सेवा लंबे समय तक की।

तभी तिरुज्ञान संबंधर के विरुद्ध जैन धर्मावलंबियों ने प्रतियोगिता रखी - अपने-अपने धर्म ग्रन्थ को वैगै के प्रवाह में छोड़ना है। जो प्रवाह के विरुद्ध तट पर आता है वही विजेता है, उसी धर्म को विजय है। इसी सिलसिले में तिरुज्ञान संबंधर का एडु इस तट पर विपरीत दिशा में बहकर आयी और गणपति ने तट तक पहुंचाया। इसलिए जैसे पूर्व ही देखा इस क्षेत्र को तिरु + एडग + नाथ = तिरुवेडगनाथर/ तिरुवेडगम कहा जाता है।

मदुरै के देखनेवाले स्थलों में इसे भी जोड़ दीजिए। रसास्वादन कीजिए। आत्मानुभव पाइये।

SHRI A.SRINIVASAN
RAJBHASHA ADHIKARI/MDU
SOUTHERN RAILWAY

रंक से कुबेर

डॉ महेश्वरी रंगनाथन
सेवानिवृत्त वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
दक्षिण रेलवे, प्रधान कार्यालय

जब मैं एलक्ट्रिक शेवर द्वारा अपने मुख को तरुण बना रहा था, तब मेरी पत्नी डॉ. जानकी ने उठकर रात के पोशाक को निकालकर, साड़ी पहन ली। तमिल संस्कृति के अनुसार, रात को पति के बाद सोने जाकर, सबेरे उसके पहले उठनेवाली पत्नी आदर्श पत्नी है। प्रथम कथनानुसार मेरी पत्नी तमिल प्रदेश की महिला, उस आदर्श के पिछले भाग के अनुसार, अमेरिकी महिला है; क्योंकि मेरे सो जाने के बाद सोकर, मेरे उठने के बाद उठती है।

अब हम दोनों छुट्टी लेकर मातृभूमि में आये हैं। हम दोनों ने समाजशास्त्र में डाक्टर की उपाधि पायी है और अब अमेरिका में काम में लगे हैं। मैंने उससे कहा, "तीन साल पहले जिस शोध कार्य को हमने अधूरा छोड़ दिया, उसे आज आठ बजे से फिर शुरू करेंगे। तैयार होकर निकलो।" "हाँ।" कहकर वह स्नान करने गयी। तीन साल पहले, जब हम दोनों भारत में आये थे, तब हमने एक पत्रिका देखी। उसमें तमिलनाडु सरकार के लाटरी टिकटों को खरीदकर, तुरंत लखपति हुए, चार व्यक्तियों के विवरण प्रकाशित थे। उसे देखते ही हमारी शोध-मनोवृत्ति ने उस पर शोध करने की प्रेरणा दी। हमने अपने शोध कार्य के दो भाग किये। प्रथम भाग में उनकी आर्थिक पृष्ठभूमि होगी। द्वितीय भाग में पुरस्कार प्राप्ति के बाद इन तीन वर्षों में उनके जीवन में जो परिवर्तन हुआ है, उसका विवरण रहेगा। पुरस्कार प्राप्त चारों मद्रासशहर में ही रहते थे। इसलिए हमारा काम सरल हो गया।

लाटरी टिकटों के कई सिलसिले होते हैं। मारियप्पन ए.टी.सिलसिले का टिकट लेकर लखपति बना था। पहले उनके घर की खोज में निकले। पत्रिकाओं में मारियप्पन का पता था और प्रकाशित था कि वे रिक्शावाले हैं। दो पत्रिकाओं में उनके सपत्नीक छायाचित्र निकले थे, लेकिन दोनों पत्रिकाओं में भिन्न महिलाओं के चित्र पत्नियों के रूप में प्रकाशित थे।

मारियप्पन की बस्ती मंगम्मा कुप्पम में, जितनी दूर तक कारजा सकती थी, उतनी दूर तक कार में गये। फिर हाथ से नाक बन्द करके गरीब लोग तंग गलियों में रहते हैं, जहाँ पाखाने की सुविधा नहीं। उनके बच्चे गलियों को हो गन्दा करते हैं। हम चलने लगे। नगरपालिका के मेहतर लोग भी उनको साफ नहीं करते। इसीलिए वहाँ हाथ से नाक बन्द करके चलना पड़ता है। पैदल ही जाकर, नारियल के पत्तों की चटाई से बनी हुई मारियप्पन की झोंपड़ी पर पहुँचे। बाँस की दो टट्टियाँ किवाड के स्थान पर थीं। एक पर "एंग वीट्टुप्पिल्लै" सिनेमा में अभिनय करनेवाले एम.जी.आर.का चित्र तथा दूसरी टट्टी पर, "वसन्त माळिगै" सिनेमा में अभिनय करनेवाले शिवाजी का चित्र चिपके हुए थे। हमने पूछताछ की कि घरवाले

कहाँ हैं? एक नग्न बालक ने "वहाँ पर इडली बनाती है, देखो" कहता हुआ इडली बनानेवाली एक स्त्री की ओर इशारा किया। वहाँ उस गली के कोने में एक महिला इडली बना रही थी। उसका और मारियप्पन का चित्र एक पत्रिका में प्रकाशित था। उसकी ओर बढ़कर हमने पूछा, "देवीजी, लखपति मारियप्पन...?"

"मेरा पति ही है; क्या चाहिए; क्यों क्या चाहिए?..."

"और एक पत्रिका में और एक औरत का चित्र उसके साथ आया था न ?"

"उस बेहूदेपन को क्यों पूछते हैं? अब वह उस लौंडी के जाल में फँसा है। लेकिन मेरे गले पर मंगल-सूत्र पहनाया है। तमिलनाडु में पति पत्नी के गले में मंगल-सूत्र पहनाता है। वही विवाह का तथा पत्नीत्व का प्रमाण है।"

यह कोई गोलमाल है समझकर, उसके छोटी पत्नी के घर का पता लगाकर हम दोनों वहाँ गये। उसकी रिक्शा गली पर थी। वह घर के चबूतरे पर लेटा था। उसकी आँखों में लालिमा थी। आसानी से हमने अनुमान किया कि वह शराब का परिणाम था। हमने धीरे से उससे बात शुरू की। हमारे लिए, दो प्याली चाय लाने के लिए, वह अपनी रखेली को भेजकर हम से बात करने लगा।

जानकी ने प्रश्न पूछा, "हर महीने आप लाटरी टिकट खरीदते हैं क्या? वह हँसी से लोट-पोट हो गया। उसके मुँह से शराब की बू आयी।

वह कह उठा "हर महीना? रोज ही। रिक्शाचलाने से रोज जो मजदूरी मिलती, उससे पहले दो गिलास शराब, फिर नायर की दूकान से नाश्ता, फिर एक लाटरी टिकट, फिर जो बचा है, वह बीबी के हाथ में जायगा। रोज एक टिकट सुनकर मैं दंग रह गया; अब मेरी समझ में आया कि इस दरिद्र देश के गरीब क्यों हमेशा गरीब हैं। जबकि उसने ऐसा कहा, जानकी ने फिर से पूछा, "पहली बीबी को कितना, इसको कितना?"

वह क्या हिसाब है; जिस दिन जिसके घर जाऊँगा, उस दिन वह बीबी है। दोनों को छोड़कर, देखो, वह बिजली का खम्भा; उसके नीचे खड़ी होनेवाली के पास जाऊँगा तो, उसके हाथ में वह रुपया दिया जायगा।" "इन रुपयों से आप क्या करेंगे? मैं ही ब्याही बीबी हूँ, मुझे दो।" कहकर वह आँख मलती है। "मैं ही मिली बीबी हूँ" कहकर, यह बदन को हिलाती है। उसे देखने पर तरस आता है; इसे देखने पर मन ललचाता है। न जाने किसका भाग्य खुलेगा। हाथ में रुपया मिलने पर ही तय किया जा सकता है।"

"इसके बाद भी रिक्शा चलायेंगे?"

“और क्या धन्धा मुझे मालूम है;चाहे तो रिक्शा को मोटर लगाया जा सकता है।
उतना ही।”

“यह पुरस्कार मिलने के बाद आपका कोई खास अनुभव हुआ?”

“अच्छा पूछा आपने। एक रईस आदमी कार लेकर झोंपड़ी में आया। उसने कहा, “मारि,
मुझे उस लाटरी टिकट को दे दो। मैं दो लाख रुपयों का काला धन दूँगा। दोनों बीबियों को
एक एक लाख दे सकते हो।”

जानकी ने कहा, “अच्छा, एक लाख के लिए दो लाख लाभ ही है न?”

“क्या माताजी, काहे के लिए मुझे दो लाख? जिस दिन सरकार ने लाटरी टिकट बेचना
शुरू किया, उस दिन से खरीदता हूँ। अब तक मिला क्या?”

“दस लाख लोगों में से एक का भाग्य खुलता है न? अभी आप आये हैं, खबर लेते हैं,
फोटो खींचते हैं, अखबार में प्रकाशित करते हैं। चार लोग “हमारा मारी” कहकर उछलते हैं।
अगर मैंने टिकट बेचा हो तो, दो लाख मिलते। ऐसा मैं मशहूर होता क्या?”

इन दोनों ने मुस्कुराती हुई पोज़दी हैं। इनका फोटो कौन खींचेगा ? रुपया-पैसा रहने
दो। आदमी को प्रसिद्धि चाहिए। उस अचानक बने कुबेर का दिल न दुखाने के लिए,उसकी
पिलायी हुई चाय को पीकर, हम आगे बढ़े।

दूसरा पुरस्कार विजेता कोडम्बाक्कम में रहनेवाले फिल्म प्रोड्यूसर थे। नाम
शौरीराजन। फिल्म प्रोड्यूसरसमझकर हमने महलों में उसे ढूँढा। वहाँ पर जिस घर में कई
परिवार थे उसमें उस शौरीराजन की भी नाम-पट्टिका थी। पहले प्रश्न पर ही उनके लड़के ने
कह दिया कि पिताजी घर पर नहीं है। उसके बाद हमने कहा, हम अमेरिका के पत्रकार हैं।
इसे सुनकर जैसे चूहा अपने बिल से झाँकता है, वैसा वह व्यक्ति झाँका। एक विशाल
मुस्कुराहट से उन्होंने हमारा स्वागत किया। लेकिन उस मुस्कुराहट में जान नहीं थी।

कुछ देर बातचीत करने के बाद पता चला कि वह व्यक्ति डब्लिंग. फिल्म लेकर, घाटे
में पड़ा हुआ है।

जानकीने स्वाभाविक रूप से पूछा, “क्या, आप हर महीने लाटरी टिकट खरीदते हैं ?”
उन्होंने उत्तर दिया, “उसमें क्या शक है ? हर सिलसिले में पचास-पचास टिकट खरीदता हूँ।”

समझ में आया कि उस व्यक्ति के घाटे में पड़ने का कारण, सूदखोरमात्र नहीं, हर सिलसिले में पचास-पचास टिकट खरीदना भी है।

आगे हमने पूछा, "अब तक कितनी बार आपको पुरस्कार मिला है?"

"पाँच बार सौरुप्यों के पुरस्कार मिले। मैं उनको नहीं लेता था।"

"एक लाख रुपयों के इस पुरस्कार से आप खुश है न ?"

"नहीं कहा जा सकता कि बहुत खुशी है; सभी सिलसिलों में पुरस्कार मिले हो तो, मैं खुश होता।"

"क्यों"

"तभी मैं कर्ज चुका सकता था। इस प्रकार एक लाख रुपये मिलने से तकलीफ ही ज्यादा है। पत्रकारों ने विज्ञापन कर दिया। कर्जदार घेरने लगे हैं। आपको भी कर्जदार समझकर ही लड़के ने कहा, "पिताजीघर पर नहीं है।

जानकी का स्त्रीहृदय तरस उठा। उसने कहा, "बिचारे।"

उस व्यक्ति ने कहा, "अब मैं जो कहने जाऊँगा वह और शोचनीय है; सुनिये।"

"कहिये, सुनने के लिए ही आये हैं।"

"एक सूदखोर, पत्थर हृदयवाला कहना भी काफी नहीं, चट्टान- हृदयवाला कहना ठीक होगा। उसके पास काला धन बहुत है। काले धन को सफेद बनाने के लिए, एक पुरस्कृत आदमी के पास जाकर, दुगुने रुपये देने कासौदा किया है। "मैंने उस व्यक्ति से पूछा- "अच्छा है; दो गुना; सामर्थ्य से आपने दुगुना बना दिया।"

"सामर्थ्य नहीं, कुछ नहीं। जब उसे पता चला कि मेरी जरूरत ज्यादा है, वह भाव करने लगा।"

"समझ में नहीं आया। "

"आप अमेरिका में रहते हैं; यहाँ के सूदखोरों की बात नहीं जानते। यहाँ के सूदखोरों का कपटाचार आप नहीं जानते। वह कहता है, इन एक लाख रुपयों को कर्जदार ले जायेंगे। उस टिकट को चुपचाप मुझे पचास हजार रुपयों को बेच दो। वे पचास हजार रुपये तुमको ज्यों के त्यों बन जायेंगे।"

"आपने क्या उत्तर दिया?"

"मैंने कहा, अब आकर पूछने से तुम बच गये; मेरे शराब में तैरते वक्त पूछा होता तो, जिन्दा नहीं लौटता।"

यह कहते हुए, मैं जानकी को कार की ओर घसीटते हुए कहा कि अब ये शराब में नहीं तैरते; उसके पहले हम भी बच जायेंगे।

तीसरा पता था, "कुमारी गीता, अभिरामी अनाथाश्रम"। जब हम वहाँ घुसे, ऐसी कलियाँ वहाँ घूमती रहती थीं, जिन्हें ढूँढ़नेवाला कोई नहीं था। इनमें से कौनसी कली गीता है, पता नहीं चला। उस अनाथाश्रम की पालिका से हमने पूछा कि कौन गीता है।

उन्होंने उस भाग्यशालिनी गीता को लाकर दिखाया और कहा कि यद्यपि इसको माँ-बाप का सुख नहीं मिला तथापि एक लाख रुपयों का पुरस्कार प्राप्त करने का सौभाग्य है।", कहकर उसका परिचय कराया।

गीता को, प्राप्त एक लाख रुपयों के पुरस्कार के मूल्य को समझने की उम्र तथा अनुभव नहीं था। वह ऐसी खड़ी थी मानों और किसी के बारे में लोग बोल रहे हैं।

मैंने पूछा, "अनाथाश्रम की बच्चों भी लाटरी टिकट खरीदती हैं क्या ?"

मुस्कुराते हुए, आश्रम पालिका ने उत्तर दिया, "उसके लिए इनके पास कहाँ रुपये हैं? आप जैसे एक सज्जन आये, इन बच्चियाँ पर उनको बहुत तरस आया। उन्होंने चाहा कि प्रत्येक बच्ची को एक लाख रुपये दूँ। उनके पास उतने रुपये नहीं थे। इसलिए लाटरी टिकट खरीदकर हर एक को एक देकर उन्होंने कहा, मेरा विश्वास है कि कम से कम एक को एक लाख रुपयों का पुरस्कार मिलेगा।"

उनका विश्वास सार्थक हुआ। गीता के नाम पर उन्होंने जो टिकट दिया था, उस पर एक लाख रुपयों का पुरस्कार मिला।

"इन रुपयों को क्या करेंगे? आश्रम के खाते में जमा करेंगे क्या?"

"वह कैसे होगा ? पत्रिकाओं में विज्ञापन देंगे कि बच्ची के रिश्तेदार हो तो सप्रमाण अर्जी भेजें। कोई नहीं तो, उसे बैंक में जमाकर, उस लड़की के बालिग होते ही, उसके हाथ में रुपये सौंप देंगे।"

"यह क्या विडम्बना है। अनाथ बच्ची के रिश्तेदार कौन होंगे ?"

"कोई नहीं होगा। तो भी कहते हैं कि कानूनन विज्ञापन देना है।"

"गीता का कोई रिश्तेदार होना नहीं चाहिए" ऐसी शुभकामना देकर हम आगे बढ़े।

चौथा पता, मैलापुर में गणेश मन्दिर की बगलवाली गली में रहनेवाली सुशीला का था। वह एक चाल थी। निर्दिष्ट संख्यावाले उस घर के सामने दो महिलाएं पापड बेल रही थीं। हमें देखते ही, बड़ी श्रीमती ने पूछा, "आप.....?"

छोटी ने बड़ी से कहा, क्या माँ किसी पत्रिका के संवाददाता होंगे।

बड़ी ने कहा, "हाँ सुशी, रोज कोई न कोई आता है; मैं ही भूल जाती हूँ।

अब समझ में आया कि वह भाग्यशालिनी सुशीला कौन है। हमने पूछा, "आपका अपने परिवार के साथ एक फोटो हम खींच सकते हैं क्या?"

"परिवार ? मां और मैं ही परिवार है।"

"क्यों आपका पतिदेव ? बच्चे ?

"पतिदेव हैं, बच्चे नहीं।"

"पतिदेव के होते हुए भी बच्चे नहीं है क्या ?"

पतिदेव के होते पर भी बच्चे नहीं हैं - पूछने के बाद ही हमें प्रश्न की नादानी समझ में आयी। जिनके पति हैं, उन सभी महिलाओं को बच्चे होते हैं क्या ? सुशीला की माँ ने उत्तर दिया, "वे यहाँ नहीं हैं।"

"क्यों ?"

सुशीला की माँ ने कहा, "उस कष्ट को क्या पूछते हैं; जैसा वादा किया, वैसा शादी होतेही हमने हीरे का कर्णफूल नहीं दिया। इसलिए इसे यहीं छोड़कर गये।"

"बिचारी।"

"यही नहीं; इसका मैं ही कारण कर्ता हूँ कहकर, इसी दुख में इसके पिता भी गुजर गये।"

"बिचारी।"

"जब पतिदेव छोड़कर गये, तब सब ने इसी को दुर्भाग्यशालिनी कहा। जब पिताजी चल बसे, तब भी सभी ने इसी की निन्दा की।"

"अभी सही, भगवान ने मेरी लड़की की ओर दृष्टि फेरी है। अब इसको यह पुरस्कार मिला है।"

हम दोनों को तमिलनाडु सरकार पर गर्व हुआ। वह अन्धा लाटरी नहीं चलाती। वह सौभाग्य तो, मज़दूर लोग, अबलायें, अनाथ लोग, कर्ज़ में फँसे हुए लोगों की ओर जाता है।

जानकी ने अपना पिटा पिटाया प्रश्न पूछा, "क्या आप हर महीने लाटरी टिकट खरीदती हैं ?"

"अच्छा पूछा आपने? मैं जो पापड़ बेलकर, दोपेट पालती हूँ, क्या हर महीने मैं लाटरी टिकट खरीद सकती हूँ? एक शुक्रवार को भगवानके दर्शन करके यहाँ लौट रही थी; तब एक लड़का इसे बेचने आया; मन में बात आयी, लेकर आयी, उतना ही।"

मारियप्पन और शौरीराजन जैसे महालक्ष्मी की खोज में यह नहीं गयी। अनाय गीता के समान यह भी अबला है। सुशीला की खोज में सौभाग्य आया है।

मैंने पूछा, "इन रुपयों का क्या करेंगी ?"

"जैसे उन्होंने माँगा, वैसे हीरे का कर्णफूल ही नहीं, हीरे का हार भी पहनाकर, उसे ससुराल भेजूँगी।"

"क्या, आपका दामाद अब इनको स्वीकार करेंगे ?"

"उनको खबर मिली; वे ही आकर यहाँ कुछ देर रहकर चले गये।"

"क्या कहा ?"

"न जाने क्या कहा ? जब युवक लोग एकान्त में रहते हैं, हमें क्यों यहाँ रहना है, समझकर, मैं मन्दिर गयी।"

माँ की इन बातों को सुनकर सुशीला ने लज्जामयी मुस्कुराहट मुस्कुरायी। उसे सन्तानवती होकर सुखी रहने का आशीर्वाद देकर हम दोनों लौटे। उसके बाद अपने अनुसन्धान को स्थगित करके, हम अमेरिका गये। तीन साल बाद अब लौट आये हैं। आज ही शोध के द्वितीय भाग को शुरू करेंगे।

यद्यपि हमारी शादी हो गयी थी, तथापि बच्चे नहीं हुए थे। अमेरिका में दम्पति अपनी इच्छा होने पर ही माँ-बाप बनते हैं। शादी के दसवें महीने में बच्चा पैदा होने की बात वहाँ नहीं है। जानकी उस निश्चय का भंग करना नहीं चाहती थी। इसीलिए जब कभी वह मुझे देखकर, विरह-ताप की मुस्कुराना चाहती थी, तब तुरन्त एक गोली निगलकर आकर वैसा मुस्कुराती थी।

ठीक आठ बजे जानकी तैयार हो गयी। भूले बिना पुरानी फाइल को लेकर हम निकलें। हम को लगा कि भारत में पेट्रोल का जो दाम है, उसे जानकर भी कार में जाना ठाठ-बाट है; इसीलिए हम बस में चले। पहला लक्ष्य मारियप्पन की बस्ती था। बाहर बस स्टाप पर उतरकर हम पैदल चलने लगे। एक आवाज़ आयी - "सार रिक्शा।"

"हाँ" कहकर उसमें बैठ गये और वह रिक्शा चलाने लगा। कुछ दूर जाने के बाद जानकी ने पूछा, "जिसको लाटरी में पुरस्कार मिला, उस मारियप्पन को आप जानते हैं?"

उसने कहा, "क्यों नहीं?"

"अब कैसे हैं ? रिक्शा चलाते हैं या और कोई सुविधाजनक पेशा शुरू किया ?"

"यह रिक्शा उनकी ही है।"

"तब आप ही मारियप्पन हैं क्या ?"

"नहीं, नहीं; यह रिक्शा ही उनकी है, इसे मैंने खरीद ली।"

"क्यों, ऐसा?"

"उसे क्या पूछते हैं? पुरस्कार मिलते ही उसे दोनों बीबियों ने बाँट लिया। इसको दस हजार रुपये ही दिये। पाँच छः महीने गाड़ी को छुए बिना वह दिन रात शराब पीकर छोटी बीबी के घर में पड़ा था। रुपये भी खत्म हो गये; बीमारी भी आयी। जब रिक्शा चलाने लगा तब उसे बीमारी भी आ घेरने लगी। छोटी ने इसे छोड़कर दूसरे के साथ गयी। इलाज कराने

पर रुपये खर्च होंगे समझकर, उसने जिन्दगी परखाना मात्र खिलाया। उसके बाद ही मैंने इस गाड़ी को खरीदा।"

"किससे खरीदा ?"

"मैंने बड़ी से ही भाव किया। लेकिन रुपये देते वक्त मेरे पति की जायदाद है, मेरा भी हक है कहकर छोटी बीबी आयी। उसको आधा भाव दिया।"

जब हमें पता चला कि मेहनती मारियप्पन को पुरस्कार के धन ने विलासी बना दिया और उसके बदन को बेजान कर दिया। आगे बढ़ना न चाहकर, नीचे उतरकर, कोडम्बाक्कम बस स्टॉप पर खड़े हो गये। फिर बस में चढ़कर शौरीराजन के घर गये।

अच्छा हुआ, शौरीराजन की फीकी पड़ी नाम-पट्टिका, उसी पुराने घर पर थी। उस घर के सामने खड़े होकर, हमने पूछताछ की। उनका वही लड़का ज़रा लंबा हो गया था। हमें देखते ही वही जवाब (पिताजी घर पर नहीं) देने लगा। फिर शायद उसे याद आयी कि हम पत्रकार हैं, इसलिए शुरू किये वाक्य को अधूरा छोड़कर, आवाज दी कि "पिताजी।"

शौरीराजन बाहर आये; वही मुस्कुराहट। हमने अपने आगमन का उद्देश्य बताया। उन्होंने कहा, "कोई परिवर्तन नहीं; कुछ नहीं। जैसे कुत्ते को रोटी के टुकड़े डालते हैं, वैसे हर एक कर्ज़दार को थोड़े-थोड़े रुपये दिये। किसी का कर्ज़ पूरा नहीं चुका। अब भी आकर माँगते रहते हैं। उसी दिन कहान, एकलाख रुपये समुद्र में घोले जानेवाले हींग के समान है।"

"तो आप आजकल लाटरी टिकट नहीं खरीदते न ?"

कुछ सोचकर उन्होंने उत्तर दिया, "आप जो कहते हैं, कुछ हद तक ठीक है। मैंने तमिलनाडु सरकार के लाटरी टिकटों को खरीदना बन्द किया। जो प्रान्त पन्द्रह लाख या बीस लाख की बम्बर लाटरी चलाते हैं, उनके टिकटों का हर सिलसिले के पचास खरीदता हूँ। निश्चित रूप से एक दिन पुरस्कार मिलेगा। सचमुच मैं जीवन में ऊपर उठूँगा।"

जानकी ने उस गीत की प्रथम पंक्ति को गुनगुनाया, जिसका अर्थ है, "मानव नहीं बदला।" हम दोनों वहाँ से अनाथश्रम जाने के लिए एक आटो में बैठ गये। फिर वहाँ से उस अनाथश्रम में गये, जहाँ गीता से मुलाकात, हुई थी।

अनाथालय की उस पालिका के मुख पर वही मुस्कान थी। वहाँ पुरानी कलियों के साथ कुछ नई कलियाँ भी थी। पालिका ने हम से पूछा, "आपलोग गीता की खोज में आये क्या? लखपतियों के लिए यहाँ स्थान नहीं है। पता चला, उन्होंने हमको ठीक तरह याद रखा था।"

आगे उन्होंने कहा, "गीता के एक मामा विदेश से आये; जब वह अनाथाश्रम में भर्ती की गयी, तब वे इस देश में नहीं थे। फिर जो आये थे, अखबार में विज्ञापन को देखकर आये थे, अपना रिश्ता प्रमाणित करके गीता को अपने साथ ले गये।"

अनाथाश्रम की पालिका ने उस मामा के अण्णानगर का पता दिया। उसकी खोज में हम लोग गये। तब उस किस्म के घर के अहाते पर एक लड़की झाड़ू लगा रही थी। उसके लहंगे में एक छेद था। उस लड़की ने लहंगे के छोर को कमर की पट्टी में ऐसा कोस लिया था कि छेद दिखायी न पड़े। ब्लौस के आस्तीन में भी एक छेद था। उसे वह छिपा न सकी। ऐसा लगा कि उसके बालों पर चार दिनों से तेल नहीं लगाया गया। उसके चेहरे पर चिन्ता ने अपनी अमिट छाप छोड़ी थी। जानकी ने पूछा, "क्या इसी घर में गीता है?" जब उत्तर देने के लिए, उस लड़की ने सिर उठाया, तब मैंने उसके चेहरे को ध्यान से देखा, तब मेरे हृदय में एक विचित्र प्रकार का दर्द हुआ।

स्तब्ध होकर जानकी ने पूछा, "ऐसा लगता है, मैंने तुमको कहीं देखा है।"

"गीता ही हूँ, दीदी।"

"यह तुम्हारे मामा का घर ही है न।"

"हाँ दीदी।"

"तुम्हारे मामा सकुशल हैं क्या ?"

"हाँ।"

"तुम कैसी हो?"

उसकी आँखों में मोती छलक पड़े। जानकी के प्रश्न का उत्तर उसने दिये, "किसी प्रकार हूँ।"

उसके उत्तर से ही पता चला कि वह सुखी नहीं है।

"क्या तुम्हारे पुरस्कार के धन को बैंक में जमा कर दिया है ?"

"बैंक ? मामा ने ही रखा है।"

"तुमको उच्छा ब्लौस भी बनवाकर नहीं दिया ?"

"ऐसी बातें पूछने पर, मामा नाराज होंगे। कहेंगे कि "तुमको भगा दूँगा; इसके बाद अनाथाश्रम में भी तुमको जगह नहीं मिलेगा। तुमको भिखारिन होकर घूमना होगा।"

गीता का धन लुट गया। अनाथ गीता अब गुलाम बन गयी; पुरस्कार ने ऐसी भयंकर स्थिति उत्पन्न की कि वह भिखारिन होगी। हमारे हृदय की थकान हमारे शरीर में व्यक्त हुई। धीरे धीरे चलकर मैलापुर बस पकड़कर, हम सुशीला के घर गये। वहाँ एक आश्चर्य तैयार था। पहले जैसे सुशीला और उसकी माँ पापड़ बेल रही थीं। पालने में एक बच्चा सो रहा था।

सुशीला और उसकी माँ ने कहा, "आइए।" फिर जानकी ने धीरे से पूछा, "सुशीला का बच्चा है या बच्ची।"

सुशीला की माँ ने उत्तर दिया, "लड़का ही है। मुझे डर है कि गुण में यह बाप पर न जाय।

"क्यों वैसा ?"

"उसके गुण के बारे में थोड़ा भी मालूम हो तो आप ऐसा नहीं पूछेंगे। क्या वह आदमी है? मनुष्य रूप में जानवर है। पिछली बार आप आये न। उसके बाद, सुशीला को हीरेके कर्णफूल, हीरे का हार आदि पहनाकर और कुछ सामान देकर भेजा। सबको उसने वेश्या विहार और घुड़दौड़ में खो दिया। इसको यह बच्चा पैदा हुआ। इसको और बच्चे को भूखेभगा दिया। उसके शब्दों में ही, जो चिनगारियाँ थीं, उनमें माता के हृदयदाह का आक्रोश व्यक्त हुआ।

"क्यों आपकी लड़की को, सौन्दर्य में क्या कमी।"

"वही मैं पूछती हूँ, आप भी पूछते हैं। और लोग भी पूछते हैं। लेकिन कौन उत्तर देने को तैयार है ?

"क्यों अब सुशीला को साथ रखने से इनकार करता है ?"

"साथ रखेगा, एक बार खाना भी नहीं देगा। यदि मैं खिलाऊँगी तो, आकर यहाँ रहेगा। वह भी मेरी कमाई से ही। लेकिन दोनों को खिलाने की मेरी शक्ति नहीं। इसलिए इस सुशीला को खिलाती हूँ। मेरी फूटी किस्मत।"

उसके बाद उस दुख भरी कथा को हम सुन नहीं सके। हम दोनों वहाँ से चले आये।

घर आकर मैंने जानकी से पूछा, हमारे अनुसन्धान का निष्कर्ष क्या है ? उसने नोट को दिखाया। उसमें लिखा था-गरीबी की रेखा के नीचे रहनेवाले, अनाप-शनाप खर्च करनेवाले लोगों को, अनाथों को और अबला स्त्रियों को, अचानक मिलनेवाली बड़ी धनराशि से कोई लाभ नहीं है। ऐसे अचानक कुबेर बननेवालों को उनके इर्द-गिर्द के लोग फिर सुदामा बना देते हैं।

DR.MAHESWARI RANGANATHAN
RETIRED SR.RA
SOUTHERN RAILWAY

सुमित्रानन्दन पन्त की बिम्ब रचना

श्री सचिन कुमार सिंह
अनुवादक, मदुरै मंडल

काव्य बिम्ब ऐसा विषय है, जो काव्य पाठकों एवं आलोचकों को सदा ही आकृष्ट करता रहा है। प्रायः सभी कवियों ने किसी न किसी मात्रा में काव्यबिम्बों का प्रयोग किया है। परन्तु कुछ कवियों ने उसका विशिष्ट प्रयोग करके, साहित्यजगत में अपना स्थान बना लिया है। "बिम्ब" अंग्रेजी शब्द "इमेज" का रूपान्तर है। बिम्ब की अनेकपरिभाषाएँ समालोचकों द्वारा दी गयी हैं। एडगार एलन पो द्वारा दी हुई परिभाषा अव्याप्ति और अतिव्याप्ति दोषों से मुक्त है। उनके अनुसार कविता ही बिम्बया बिम्बों में सिलसिला है, और बिम्ब वह है, जो एक क्षण में विचारात्मक अथवा भावात्मक अनुभूति उत्पन्न करता है।"

A poem is an image of a succession of images and an image is that which presents an intellectual or emotional complex in an instant of time. इसी को अन्य समालोचक डॉ. एस.टी.नरसिंहाचारी ने लिखा है, "बिम्ब का तात्पर्य रूप का मानसिक साक्षात्कार है।

उद्भव के आधार पर बिम्ब दो प्रकार के माने जाते हैं, स्मृतिजन्य और स्वरचिता इन्द्रियों के आधार पर, रस बिम्ब, रूप बिम्ब, शब्द बिम्ब, गंधबिम्ब, स्पर्श बिम्ब आदि हो सकते हैं।

अब इस परिप्रेक्ष्य में पन्तजी के बिम्ब विधान को देखें।

अमूर्त मन को मूर्त रूप देने में पन्तजी के बिम्ब सक्षम हैं। "पल्लव" की भूमिका में उन्होंने लिखा है, "मधु के छत्ते से मधु के समान भाव छलकना चाहिए। इसे उन्होंने करके दिखाया है। "पल्लव" में संकलित "उच्छवास" में उच्छवास जैसी अमूर्त क्रिया को मूर्त तथा गतिशील रूप दिया है: देखें

"सिसकते अस्थिर मानस से
बाल बादल-सा उठकर आज
सरल अस्फुट उच्छवास!
अपने छाया के पंखों में
(नीरव घोष भरे शंखों में)

मेरे आँसू गूँथ फैल गम्भीर - मेघ-सा,
आच्छादित कर ले सारा आकाश!

इसमें कई बिम्ब मिलकर एक सघन मूर्त बिंब का निर्माण करते हैं। छाया के पंखों में सूक्ष्मता की अनुभूति है, "गम्भीर मेघ" में दृढता का द्योतन है, सारा आकाश आच्छादित कर लेने में विराटता है। अमूर्त को मूर्त करनेवाला सुन्दर, विराट हृश्य बिम्ब इन पंक्तियों में है।

जीवन की उपलब्धियों निराशाओं आदि को बिम्ब द्वारा मूर्त करने में पन्तजी अद्वितीय हैं। उदाहरण के लिए "गुंजन" में

“दुख इस मानव आत्मा का
रे नित्र का मधुमय-भोजन
दुख के तम को खा-खा कर
भरती प्रकाश से वह मन!”

मानव-आत्मा का मधुमय भोजन कहकर, दुख से बच न पाने की स्थिति को अत्यधिक मूर्त किया है। दुख की गहराई में मानों पाठक के मन को कवि ने डुबो दिया है। "नौका विहार" में अत्यधिक सुन्दर गतिशील बिम्ब हैं। पाठक को लगता है, वह उन्हें आँखों से देख रहा है; इतना ही नहीं, तब उसके मन में हो सकनेवाले सभी भावों का मूर्त रूप एक साथ प्रस्तुत है। उदाहरण देखें

"नौका से उठती जल हिलोर,
हिल पड़ते नभ के ओर छोर!
विस्फारित नयनों से निश्चल कुछ खोज रहे चल तारक दल
ज्योतिषकर नभ का अन्तस्तल;
जिनके लघु दीपों के चंचल, अंचल की ओट किये अविरल
फिरती लहरें, लुक-छिप पल-पल !
सामने शुक्र की छवि झलमल, थैरती परी-सी जल में कल,
रूपहरे कर्चों में हो ओझल !
लहरों के घूंघट से झुक झुक,

दशमी का शशि निज तिर्यक मुख
दिखलाता, मुग्धा सा रुक रुक!

इसमें भी कई बिम्ब मिलकर, एक सुन्दर सजीव गतिशील दृश्य बिम्ब प्रस्तुत करते हैं। अपनी नवोद्गा पत्नी के सामने पुरुष के जितने भाव उत्पन्न होंगे उन सब का मूर्त रूप तथा प्रकृति का वस्तु बिम्ब दोनों एकसाथ पाये जाते हैं।

"गुंजन"में सुन्दर श्रव्य बिम्ब हैं। उदाहरण

“नीर व तार हृदय में
गूँज रहे हैं मंजुल लय में,
रहस्य स्पर्श से अरुणोदय में
चरण कमल पर अर्पण कर मन,
रज-रंजित कर तन,
मधुरस सजित मम जीवन
चरणामृत - आशय में
नीर व तार हृदय में -
नित्य-कर्म-पथ पर तत्पर धर;
निर्मल कर अन्तर;
पर - सेवा का मृदु- पराग भर
मेरे मधु संचय में।”

नीर वतार के गुंजने में सुन्दर श्रव्य बिम्ब, चरण-कमल पर मन का अर्पण करने में, सुन्दर दृश्य बिम्ब, मधुरस में जीवन मज्जित करने में सुन्दर स्पर्श बिम्ब एक साथ पाये जाते हैं। तार के अलावा बाकी सब उपपात्र वस्तुएँ प्रकृति से ली गयी हैं। ऐसे बिम्बों से अनुभूति कई गुनी होकर, मन को रस में डुबो लेती है। अन्तिम दो पंक्तियों में “पर सेवा” को “मृदु पराग” बनाकर, उसका भव्य मूर्त रूप दिया है।

"ज्योस्ना" में कई गीत हैं जिनमें सुन्दर दृश्य बिम्ब हैं। उदाहरण

“कौन अप्सरि अज्ञात,
उतरती नभ से आभाकार
स्वर्ग-की-शोभा-सी साभार
फुल्ल मधु-ऋतु की सी संसार,
विश्वस्त्री का कृश गात।

इसमें विश्व को ही कृश-गात अप्सारि का रूप दिया गया है। विराट को सीमा में बाँधने का प्रयास है। आभा जिसमें स्थूलत्व सब से कम है, उसको भी मूर्त रूप दिया गया है। शोभा जो मन से संवेद्य है, उसको भी मूर्त रूप दिया गया है। इसी में और एक उदाहरण देखें,

"अर्थि-भृत चल-जल भृकुटि विलास,
अधर-पल्लव, स्थिति मुकुल विकास,
चतुर्दिक राशि राशि हिम-हिम
अरुण पद-तल जलजात!

इसमें बिम्बों की श्रृंखला है; एक बिम्ब को समझने के पहले दूसरा, उसे समझने के पहले तीसरा बिम्ब आ जाते हैं। बिम्बों की श्रृंखला बनती है। ये सब गतिशील बिम्ब हैं। पूर्ववर्ती बिम्ब पर परवर्ती बिम्ब आधारित है जैसे अधर-पल्लव स्मृति मुकुल-विकास",

ये बिम्ब श्रृंखलाएँ पाठक के मन को चारों दिशाओं से भाव में डुबो देते हैं।

फिर "युगान्त" में पंतजी का दृष्टिकोण बदला, पंतजी प्रगतिवादी बने। तो भी उनका चितेरा रूप उसके अनुकूल बदला। परन्तु अमूर्त को मूर्त बनाने की उनकी क्षमता में कमी नहीं आयी। उदाहरण देख लें

"काँप उठे मानस की अन्ध
गुहाओं का तम,"

मन की रुढिबद्ध कुल्मित भावनाओं का गुहाओं के तम का रूप दिया गया है। मन को मूर्त रूप दिया है, 'युगान्तर' से उदाहरण देखें

"अंधियाले का दुर्ग बना हठ
जीर्ण जातिगत मन का खंडहर"

"मन का खंडहर" कहकर, और "अंधियालका दुर्ग" कहकर, मन की विकृत अवस्था जो अत्यन्त अमूर्त है, उसका दृश्य रूप प्रस्तुत किया गया है। "ग्राभ्या"में भी अत्यन्त अमूर्त को अत्यन्त मूर्त बनाने के कई बिम्ब मिलते हैं। उदाहरण देख लें

"आवा मौन प्रभात अकेला, संध्या भरी उदयसी,

यहाँ घूमती दोपहरी में स्वप्नों की छाया सी!"

उद्यसी अत्यन्त अमूर्त है। उदासी मन का भाव है। सन्ध्या, काल है। दोनों को मूर्त बनाकर एक साथ मिलाकर मूर्त किया गया है। "मौन प्रभात" प्रभात में जो उल्लास और आनन्द होना चाहिए, उसके बिना आता है। अतः मौन है। संध्या अंधेरी रात की पूर्वसूचना है। स्वप्न ही अमूर्त है, उसकी छाया और भी अमूर्त है। दोपहरी में कोई सोये, तब स्वप्न आये तो अत्यन्त क्षीण होते, उसका कुछ भी प्रायः यादा रहता नहीं। उसकी भी छाया अत्यन्त अमूर्त है। इसी तरह गरीब ग्रामवासी को न प्रातः काल में, न दुपहर में, न संध्या में खुशी है। इसी प्रकार जीवन के प्रातः काल, दुपहर और संध्या में उसे खुशी नहीं। इसे दो पंक्तियों में मूर्त कर दिया गया है। अद्भुत दृश्य बिम्ब है। "स्वर्णकिरण" में संकलित "अरुण ज्वाल में देखें सघन बिम्ब,

"ओ अरुण ज्वाल!
चेतना रुधिर लौ सी-कम्पित
जीवन जावक से पद रंजित
ऊषा पावक से खिला क्षितिज
दीपित करती तुम स्वर्ग माल !"

'ओ अरुण ज्वाल' के संबोधन में अरुण ज्वाल में एक चैतन्य आता है, मानों वह ज्वाल एक व्यक्ति है। चेतना रुधिर लौ सी-कम्पित में उसमें एक प्रकार की गतिशीलता है। "जीवन" का अनुभव किया जा सकता है। उसका रूप खड़ा करना अत्यन्त कठिन है। उसे जावक बनाकर जावक-रंजित पहकर का चित्राकर्षक चित्र प्रस्तुत किया गया है। ऊषा पावक से क्षितिज की खिलाने में प्रकृति के साधारण व्यापार का अत्यन्त मूर्ती भव्य विराट चित्र प्रस्तुत किया गया है। "स्वर्ग भाल" को दीपित करने में कल्पना का उड़ान है। स्वर्ग को एक व्यक्ति बनाकर, उसका उन्नत स्थान भाल की कल्पना की गयी है। फिर उस भाल को दीपित करनेवाली अरुण ज्वाल। एक पर दूसरा, दूसरे पर तीसरा आदि कई बिम्ब पिरोये गये हैं। बिम्बों की श्रृंखला है। साथ साथ विराटता भी है। ऐसे विराट बिम्ब पन्तजी की रचनाओं में ही देखा जा सकता है।

"स्वर्ण किरण" में कवि ने नये सुन्दर आदर्श जगत की कल्पना की है। उसमें "जिज्ञासा" शीर्षकवाली कविता में कवि ने सृष्टि के रहस्य पर जिज्ञासा व्यक्त की है। इसमें कुछ अमूर्त भावों को तथ्यों को दृश्य रूप दिया है। एक उदाहरण देखें

"यह ओसों की डाल पिरो दी किसने जीवन के आँगन में?"

हास अश्रु की सजल ज्वाल यह किसने फैला दी दिशि क्षण में!
ताराओं से पुता हुआ नीर वअनन्त चिर अवनत ऊपर,
कौन गहन के अवगुंठन से झाँक रहा वह हँस हँस भू पर?

जीवन का अनुभव किया जा सकता है। उसका रूप खड़ा करना दुष्कर कार्य है। उसके एक आँगन की सृष्टि करके पंतजी ने जीवन का दृश्य रूप खड़ा कर दिया है। "सजल ज्वाल"जैसे विरोधाभास से जीवन के मृदु, कठोर सुख दुखमय अनुभवों को दो शब्दों में समेट लिया है। "क्षण" के लिए कवि द्वारा दिया हुआ विशेषण "दिशि" है। इसको समझना कुछ कठिन ही है। अर्थ यह निकलता है कि, सभी दिशाओं में एक ही क्षण में फैला ही, "ताराओं से युत्प हुआ नीख अनन्त अत्यन्त मनोरम एवं विराट कल्पना है। ताराओं को हाथ में लेकर, पूरे आकाश को कोई पोत देता तो कितना समय लगेगा और वह दृश्य कितना सुन्दर होगा। कवि की कल्पना पंखों पर उड़ती है। उसे पकड़ पाने में ग्राहक कल्पना असफल हो जाती है। अंतिम पंक्ति में विश्वस्फटा की ओर संकेत है। कवि, आकाश, तारे और जीवनद्वारा ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण देता है। रहस्यवाद अनायास आ पहुँचा है,बिम्ब विधान के पंखों पर उड़कर।

ऐसे कई बिम्ब हैं, जिनमें अनेक प्रकार के सघन बिम्ब मिलकर, एक सुन्दर चित्र प्रस्तुत करते हैं। "स्वर्णधूलि" में संकलित "प्राणाकांक्षा" में
हृदय रक्त रंजित सुन्दर
नृत्य मुग्ध प्रिय चरणों पर
प्राणों की स्वर्णाकांक्षा सम
प्रणय जड़ित, चंचल,निरुपम"

नर्तकी नृत्य करतेसमय, पैरों पर महावर लगायी हुई है। यहाँ हृदय का रक्त महावर का काम करता है। "रक्त रंजित" और "नृत्य मुग्ध" दोनों चरणों की विशेषवाएँ हैं। "रक्त रंजित"वस्तु बिम्ब है। रक्त रंजितचरणों को देखा जा सकता है। चरणों को "नृत्य मुग्ध"करना अधिक सूक्ष्म है। यह सूक्ष्मता और भी बढ़ती है। "प्राण"अमूर्त हैं। उनकी आकांक्षा और भी अमूर्त है। आकांक्षा का स्वर्णिम होना और सूक्ष्म है। उसके समान होना "प्रणय जड़ित" में मानों प्रणय कई नग हैं। यहाँ सूक्ष्मता की पराकाष्ठा है। वस्तु बिम्ब और भाव बिम्ब मिलकर, बिम्बों की सघन श्रृंखला होती है। पाठक को, ये बिम्ब शहद की नदी में डुबो देते हैं।

“सौवर्ण” में तीन काव्य रूपक हैं, जिनमें स्वर्णिम भविष्य की कल्पना है। यहाँ कविका दृष्टिकोण बदला है। परन्तु बिम्ब रचना की क्षमता घटी नहीं। उदाहरण के लिए

एक और बिम्ब रचना देखेंगे -

“जन धरती में फलती नहीं सुनहली संस्कृति,
वह उगती कुछ बुद्धिजीवियों के मानस में,
केसर की क्यारी हँसती ज्यों सरोवर में !”

केसर की क्यारी कितनी सुन्दर रहती होगी? संस्कृति जैसी परिभाषा को चुनौती देनेवाली चेतना को “सरोवर” और “केसर की क्यारी” द्वारा अत्यन्त मूर्त एवं सुन्दर बना दिया है। कवि ने, फिर उसी में संकलित “कलाकार” काव्य रूपक में

“यह भावों का स्वर्गलोक है मनोभूमि पर,
झूल रहो जो संयम तप की कृश डोरों में
यहाँ व्याप्त चिन्मय प्रकाश नीर व नीलोज्ज्वल,
मर्यादा में बँधी क्यारियाँ, - भाव सशि के
मुकुल स्वप्न-स्मित पक्व पुण्य फल, आदर्शों की
लतिकाएँ लटकीं पात्रों से विनयानत हों!”

इसमें भावी जगत की कल्पना को चित्रों में उतार दिया गया है। कृश डोरों पर झूलनेवाला “स्वर्गलोक” रोमांच उत्पन्न करता है। इसी प्रकार स्वप्न स्मित मुकुल अमूर्त आकांक्षा को मूर्त रूप देता है।

“वाणी” में पंतजी का दृष्टिकोण बदला है परन्तु उसमें भी सुन्दर कोमल बिम्बों की कमी नहीं। एक उदाहरण देखें। “वाणी” में संकलित “आत्मिका” में

“हिमगिरि प्रांतर था दिग् हर्षित,
प्रकृति क्रोड ऋतु शोभा कल्पित -
गंध गुंथी रेश्मीवायु थी,
मुक्त नील गिरि पंखों पर स्थित!
हरित जलधि-से थे निर्जन वन
जिनमें घुसने में लगता भय,
भाव मौन गहरी छायाएँ
कँप कँप उर में भरती विस्मय !

दिशाओं को भी हर्षित करनेवाला विशाल प्रान्त है। वायु को 'रेश्मी' बनाकर उसका भव्य स्पर्श बिम्ब बनाया गया है। "गंध गुंथी"में वायु का दृश्य रूप भी प्रस्तुत किया गया है। "हरित जलधि"से वन का भव्य रोमांचकारी रूप सामने आता है। ऐसा लगता है, मानों छायाएँ इसलिए मौन हैं कि वे भाव के बोझ को ढोती हैं। छाया को भी व्यक्ति का रूप दिया गया है।

“लोकायतन”में
स्मृति जीर्ण व्यवस्थाओं की
कारा में बंदी, स्तंभित;

यद्यपि इसमें नयी चेतना है, कवि ने उसके अनुरूप बिम्ब रचा है। व्यवस्थाएँ स्मृति से जीर्ण अर्थात्, वर्तमान काल के लिए अनुपयोगी, 'जीर्ण' शब्द से उनकी अनुपयोगित्व मूर्त रूप में सामने आती है।

रुग्ण शय्या से रचित "गीत अगीत" में भी सुन्दर बिम्ब हैं, जो अमूर्त मन को मूर्त कर देते हैं, उदाहरण देखें

"मेरा मन धन श्यामल तरुवर!
प्राणों के स्पर्शों से जिसके
गीत - पत्र झरते मृदु मर्मर !"

मन को श्यामलतरु बनाने के साथ-साथ, उससेमर्मर की ध्वनि के साथ पत्र गिरने का चित्र भी प्रस्तुत कर दिया गया है। यह दूसरा बिम्ब श्यामल तरुवर(अर्थात्) मन को सजीव बना देता है।

पंतजी की हरकविता में ऐसे सुन्दर चित्र आकर्षक बिम्ब पाये जाते हैं। उनको आलोचकों ने चितरे की उपाधि दी तो लेश मात्र भी अत्युक्ति नहीं। पंतजी का बिम्बविधान एक नहीं अनेक शोधग्रन्थों का विषय है।

सूरदास के सम्बन्ध में स्वर्गीय हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि, जब सूरदास रचना करने बैठते हैं, मानों अलंकारशास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे जाता है। "मेरा विचार है कि, जब पंतजी रचना करने बैठते हैं, बिम्बविधान नतमस्तक होकर उनकी लेखनी में प्रविष्ट होती हैं।

SHRI SACHIN KUMAR SINGH
TRANSLATOR
MADURAI DIVISION

इतिहासकार रामचन्द्र शुक्ल

श्रीमती एल.मुत्तुलक्ष्मी

वरिष्ठ अनुवादक

मदुरै मंडल

हिन्दी विद्वानों को विदित है कि हिन्दी साहित्य का इतिहास सर्वप्रथम गार्सा दी तासी ने फेंच में लिखा था। ग्रन्थकार ने हिन्दी के अन्तर्गत उर्दू को भी सम्मिलित करके, पुस्तक का आधा भाग, उर्दू कवियों के लिए रखा है। इसके कुछ समय बाद, "शिवसिंह सरोज" (हिन्दी साहित्य का इतिहास) प्रकाशित हुआ, जिसमें कुछ अधिक कवि सम्मिलित हैं। इसके कुछ समय बाद (हिन्दी साहित्य का इतिहास) "मिश्रबन्धु विनाद" का प्रकाशित हुआ। इसमें पाँच हजार कवियों के कृतित्व का विश्लेषण है। इसके बाद हिन्दी साहित्य के इतिहास के बहुत से ग्रन्थ प्रकाशित हुए।

रामचन्द्र शुक्ल कृत "हिन्दी साहित्य का इतिहास" ईस्वी उन्नीस सौ उन्तीस में प्रकाशित हुआ, जो निश्चित रूप से हिन्दी साहित्य के इतिहास में मील का पत्थर है। जिन्होंने इसको ध्यान से पढ़ा, उन्होंने अनुभव किया होगा कि शुक्लजी ने जो बातें लिखी हैं, उनको प्रमाणों द्वारा पुष्ट किया है।

काशी विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए, शुक्लजी ने हिन्दी साहित्य के इतिहास की पुस्तक के अभाव का अनुभव किया। इसीलिए उन्होंने इस ग्रन्थ का ढाँचा बनाया और जल्दी उनको पुस्तक तैयार करना पड़ा। इसलिए, शायद कुछ कवियों के नाम छूट गये हैं, इसका उल्लेख, उन्होंने स्वयं भूमिका में किया है।

इस बृहदाकार पुस्तक में सात सौ चौतीस पृष्ठ हैं। इसको उन्होंने चौबीस प्रकरणों में बाँटा है। प्रथम प्रकरण में काल विभाजन है। इस प्रकरण के आरम्भ में उन्होंने एक प्रकार से साहित्य के इतिहास की परिभाषा दी है। उन्होंने लिखा है "प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ, साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होगदेता है। आदि से अन्त तक उन्हीं चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए, साहित्य परम्परा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है। "हिन्दी साहित्य का काल-विभाजन करते हुए उन्होंने लिखा है -

वीरगाथाकाल : वि.सं. 1050-1375

भक्तिकाल : वि.सं. 1375-1700

रीतिकाल : वि.सं. 1700-1900

आधुनिक काल: (गद्यकाल 1900 से)

शुक्लजीकृत इतिहास पर आपत्ति उठानेवाले आलोचक लोग लिखते हैं कि “साहित्य की कोई प्रवृत्ति, किसी निश्चित वर्ष से समाप्त नहीं हो सकती।” इस तथ्य को शुक्लजी ने भी माना है। यदि काल-विभाजन करना हो तो, उसके लिए, कोई आधार मानना है। शुक्लजी के ही शब्दों में “यद्यपि इन कालों की रचनाओं की विशेष प्रवृत्ति के अनुसार ही इनका नामकरण किया गया है, पर यह न समझना चाहिए कि विशेष काल में और प्रकार की रचनाएं होती ही नहीं थीं। जैसे भक्तिकाल या रीतिकाल को लें तो उसमें वीर रस के अनेक काव्य मिलेंगे, जिनमें वीर राजाओं की प्रशंसा उसी ढंग की होगी, जिस ढंग की वीरगाथाकाल में हुआ करती थी। अतः प्रत्येक काल का वर्णन इस प्रणाली पर किया जायगा कि पहले तो उक्तकाल की विशेष प्रवृत्तिसूचक उन रचनाओं का वर्णन होगा, जो उस काल के लक्षण के अन्तर्गत होंगी, पीछे संक्षेप में उनके अतिरिक्त और प्रकार की ध्यान देने योग्य रचनाओं का उल्लेख होगा। इसके अनुसार, उन्होंने हर एक प्रकरण में मुख्य प्रवृत्तियों के तथा मुख्य कवियों के विश्लेषण के बाद “फुटकर कवि” या “फुटकर रचनाएँ” शीर्षक से अन्य प्रवृत्तियों का तथा अन्य कवियों के कृतित्व का विश्लेषण किया है। लेखक ने प्रचुर मात्रा में उद्धरण भी दिये हैं।

इस सम्बन्ध में परवर्ती इतिहास-लेखक डॉ.रामकुमार वर्माजी का मत दृष्टव्य है --- “इसमें (इस पुस्तक में) कवियों की संख्या की अपेक्षा, कवियों के महत्व पर अधिक ध्यान दिया गया है। अभी तक लिखे हुए इतिहासों में इस इतिहास को सर्व-श्रेष्ठ मानना चाहिए। इसमें हमें इतिहास के साथ, समालोचना और आधुनिक दृष्टिकोण से कवियों का निरूपण मिलता है। काव्यधाराओं का विवेचन जैसे इस इतिहास में है, वैसा अन्यत्र नहीं। रामचन्द्र शुक्ल कृत “हिन्दी साहित्य का इतिहास” की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है। इसकी तुलना रमाशंकरशुक्ल रसाल कृत “हिन्दी साहित्य का इतिहास” से करने पर यह बात और स्पष्ट हो जायगी। इस पर उन्हीं डॉ.रामकुमार वर्मा ने लिखा है, “इसमें कवियों और लेखकों की कृतियों के उदाहरण नहीं हैं। यह शायद हिन्दी साहित्य के सभी इतिहासों से कलेवर में बड़ा है। इसमें हिन्दी साहित्य की सभी ज्ञातव्य बातों का परिचय दिया गया है, पर लेखक ने उन्हें वैज्ञानिक रीति से भी नहीं समझाया इस इतिहास में लेखक का अपना कोई निर्णय भी नहीं है।”

शुक्लजी कृत “हिन्दी साहित्य का इतिहास” में (मुद्रित पुस्तक में) बीस पृष्ठों में आदिकाल अर्थात् जैन, सिद्ध और नार्थों की कृतियों का विवेचन है। इस विवेचन में अपभ्रंश से पूर्वी हिन्दी के विकास को उन्होंने सोदाहरण और सप्रमाण समझाया है। इससे शुक्लजी की पैनी दृष्टि स्पष्ट होती है।

मुद्रित पुस्तक में अट्ठाईस पृष्ठों में वीरगाथाकाल का विवेचन किया गया है। जैसे शुक्लजी ने आरम्भ में ही लिखा है, वीरगाथाकाल का नामकरण मुख्य प्रवृत्ति पर आधारित है। वीरगाथा काल के अन्तर्गत शुक्लजी ने दो प्रकरणों को रखा है; एक, देश भाषा काव्य और दूसरा फुटकर रचनाएँ। "देश भाषा काव्य" शीर्षक के अन्तर्गत, लेखक ने सामाजिक पृष्ठभूमि के साथ, खुमान रासो, बीसलदेव रासो, पृथ्वीराज रासो, भट्ट केदार और मधुकर कृत जयचंद-प्रकाश, जयमयंक जयचन्द्रिका, जागनिक कृत आल्हाखण्ड, श्रीधर कृत रणमल्लछंद आदि का विश्लेषण किया है। इन देशभाषा काव्यों का विश्लेषण करते समय, भाषा का विकास दिखाना लेखक भूला नहीं। खुसरो और विद्यापति को उन्होंने फुटकररचनाओं के अन्तर्गत रखा है। चन्द्र बरदाई का वंशवृक्ष दिया है और पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता का विस्तृत विवेचन किया है। परन्तु इसमें कुछ कमी भी है। इस काल के उल्लेखनीय कवि अद्दहमाण, बब्बर और मुल्लादाऊद का उल्लेख नहीं है।

भक्तिकाल के अन्तर्गत शुक्लजी ने छः प्रकरण रखे हैं और मुद्रित पुस्तक में एक सौ उन्सठ पृष्ठों में इस काल का विवेचन है। इन छः प्रकरणों में प्रथम प्रकरण का शीर्षक है "सामान्य परिचय"। इसके अन्तर्गत शुक्लजी ने तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों का विवेचन किया है। इस प्रसंग में लेखक ने अपना मत भी लिखा है, "धर्म का प्रवाह, कर्म ज्ञान और भक्ति इन तीन धाराओं में चलता है। इन तीनों के सामंजस्य से धर्म अपनी पूर्ण सजीव दशा में रहता है। किसी एक के अभाव से वह विकलांग रहता है। कर्म के बिना वह लूला-लंगड़ा, ज्ञान के बिना अंधा और भक्ति के बिना हृदय-विहीन या निष्प्राण रहता है।"

भक्तिकाल की धार्मिक पृष्ठभूमि के विश्लेषण में शुक्लजी ने दो तथ्यपरक गलतियाँ की हैं। उन्होंने लिखा है विक्रम संवत् बारह सौ चौवन में, गुजरात में मध्वाचार्य का जन्म हुआ, जबकि विक्रम संवत् तेरह सौ चौदह अर्थात् ईस्वी बारह सौ सत्तावन में उडुवी में उनका जन्म हुआ था। परन्तु इसके कारण, दार्शनिक पृष्ठभूमि के विश्लेषण में कोई कमी नहीं आयी। बहुत संभव है कि यह मुद्रण की अशुद्धि हो, क्योंकि तेरहवाँ पुनर्मुद्रण, शुक्लजी के निधन के बाद छापा गया। फिर इस प्रकरण में ज्ञानदेव पर काफी विस्तार से लिखा गया है। इस "सामान्य परिचय" के अन्तर्गत भक्तिकाल की दार्शनिक पृष्ठभूमि का परिचय दिया गया है। भक्तिकाल को शुक्लजी ने चार शाखाओं में बाँटा है। ज्ञानाश्रयी शाखा के अन्तर्गत लेखक ने कबीर, दादू दयाल, गुरुनानक, धर्मदास, रविदास, सुन्दरदास आदि को रखा है। हर एक कवि की कृतियों की भावगत एवं शिल्पगत विशेषताओं का विश्लेषण किया है और प्रचुर उदाहरण भी दिये हैं।

प्रेममार्गी शाखा के अन्तर्गत विज्ञ लेखक ने कुतबन, मंझन, मलिक मुहम्मद जायसी, उसमान, शेख नबी का सिमशाह आदि की कृतियों का विश्लेषण किया है। मृगावती, चित्रावली और पद्मावत की कथाओं को भी संक्षेप में लिखा है। इनकी दार्शनिकता भावभूमि एवं शिल्प पर विस्तार से लिखा है। बहुत उदाहरणों से अपनी मान्यताओं को पुष्ट किया है।

सगुण धारा के अन्तर्गत, पहले राम भक्ति शाखा का विवेचन किया है। इसके प्रारंभ में रामानन्द और राचवानन्द पर कुछ विस्तार से लिखा है। साथ साथ तत्कालीन धार्मिक परिस्थिति की भी चर्चा की है।

लेखक ने गोस्वामी तुलसीदास पर, मुद्रित पुस्तक में इक्कीस पृष्ठों में विवेचना की है। शुक्लजी ने तुलसीदास का जन्मस्थान राजापुर ही माना है, न कि सोरो। तुलसी की बारह रचनाओं को ही लेखक ने प्रामाणिक माना है। कलिधर्माधर्म निरूपण को भी इन्होंने तुलसीकृत नहीं माना है। तुलसी की भाषा से उदाहरण देकर, शुक्लजी ने यह सिद्ध किया है कि तुलसी पूर्वी उत्तर प्रदेश के निवासी थे और अवधीउनकी मातृभाषा थी। इसके लिए शुक्लजी ने कई तर्क दिये हैं। अधिकांश आलोचकों ने तुलसीदास को रामानन्द की शिष्य परम्परा में रखा है। परन्तु शुक्लजी की पैनी दृष्टि रामानन्द परम्परा पर प्राप्त सम्पूर्ण लिखित सामग्री पर पड़ी है। इसके आधार पर उन्होंने निष्कर्ष निकाला है कि "उक्त संप्रदाय के अन्तर्गत जितनी शिष्य परम्पराएं मानी जाती हैं, उनमें तुलसीदासजी का नाम कहीं नहीं है। रामानन्द परम्परा में सम्मिलित करने के लिए उन्हें नरहरिदास का शिष्य बताकर जो परम्परा मिलाई गयी है, वह कल्पित प्रतीत होती है। वे रामोपासक वैष्णव अवश्य थे, पर स्मार्त वैष्णव थे।" इससे लेखक को सतत कार्यशील शोध-प्रवृत्ति का पता चलता है।

इस प्रसंग में गोस्वामी तुलसीदास पर उन्होंने जो टिप्पणी की है, वह उल्लेखनीय है। वह है, "गोस्वामीजी के प्रादुर्भावको हिन्दी काव्य के क्षेत्र में एक चमत्कार मानना चाहिए। हिन्दी काव्य की शक्ति का पूर्ण प्रसार इनकी रचनाओं में ही पहले पहल दिखाई पड़ा।" इसको पढ़ने पर मुझे अनायास ही इलिपट की वह पंक्ति याद आती है, "A classical poet exhausts the language of his time."

कई आलोचक शुक्लजी पर यह आरोप करते हैं कि उन्होंने पक्षपात किया है, अपने प्रदेश के होने के कारण, तुलसी की अधिक प्रशंसा की है, जबकि सूरदास की उतनी प्रशंसा नहीं की। यह निराधार आरोप है। पहली बात है कि "हिन्दी साहित्य का इतिहास" एक शोध प्रबन्ध है। शोध में जो तटस्थता वांछित है, वह निश्चित रूप से, शुक्ल कृत "हिन्दी साहित्य का इतिहास" में है। उन्होंने लिखा है, "यद्यपि तुलसी के समान सूर का काव्य-क्षेत्र इतना

व्यापक नहीं कि उसमें जीवन की भिन्न-भिन्न दशाओं का समावेश हो, पर, जिस परिमित पुण्यभूमि में, उनकी वाणी ने संचरण किया, उसका कोई कोना अछूता न छूटा। शृंगार और वात्सल्य के क्षेत्र में जहाँ तक उनकी दृष्टि पहुँची, वहाँ तक और किसी की नहीं। इन दोनों क्षेत्रों में तो इस महाकवि ने (सूरदास) मानों औरों के लिए कुछ छोड़ा नहीं (यहाँ महाकवि से तात्पर्य महान कवि है, न कि महाकाव्य का रचयिता) गोस्वामी तुलसीदासजी ने गीतावली में बाललीला को इनकी देखादेखी बहुत अधिक विस्तार दिया सही, पर उसमें बालसुलभ भावों की और चेष्टाओं की वह प्रचुरता नहीं आई, उसमें रूपवर्णन को ही प्रचुरता रही। बालचेष्टा के स्वाभाविक मनोहर चित्रों का इतना बड़ा भण्डार और कहीं नहीं।"

अपने इस कथन की पुष्टि में शुक्लजी ने बहुत उद्धरण दिये हैं। सूर के भ्रमरगीत के सम्बन्ध में शुक्लजी ने लिखा है, "ऐसा सुन्दर उपालम्भ काव्य और कहीं नहीं मिलता।" विज्ञ लेखक ने तुलसीदास के बाद, रामभक्ति शाखा में, स्वामी अग्रदास, नाभादास, प्राणवन्द चौहान और हृदयराम के कृतित्व का विश्लेषण किया है।

कृष्णभक्ति शाखा के अन्तर्गत, वल्लभाचार्य की जीवनी, कृतित्व और दर्शन का विवेचन किया है। इसके बाद सूरदास की संक्षिप्त जीवनी तथा उनके कृतित्व का विस्तृत विश्लेषण किया है।

इसी प्रकरण के अन्तर्गत रामचन्द्र शुक्लजी ने अष्टछाप के अन्य कवि, मीराबाई व्यास, गदाधर भट्ट, ध्रुवदास आदि के कृतित्वों का सोदाहरण विवेचन किया है। इसके बाद "भक्तिकाल की फुटकल रचनाएँ" प्रकरण के अन्तर्गत, बाईस कवियों के कृतित्व का विश्लेषण किया गया है। इनमें से केशवदास, सेनापति और नरोत्तमदास सम्मिलित हैं। इस प्रकरण के अन्त में मुख्य आख्यान काव्यों की तालिका भी दी गयी है, जिसमें कुछ राजस्थानी काव्य भी सम्मिलित हैं।

रीतिकाल के प्रथम प्रकरण में "सामान्य परिचय" है उसमें राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक पृष्ठभूमि संक्षेप में दी गयी है। इस काल के नामकरण में भी बहुत मतभेद है। परन्तु जैसे भूमिका में ही लिखा है, शुक्लजी ने मुख्य प्रवृत्ति के आधार पर ही नामकरण किया है, जो अत्यन्त समीचीन लगता है। रीतिकालीन वस्तु के सम्बन्ध में शुक्लजी का मत दृष्टव्य है, "काव्य के स्वरूप और अंगों के सम्बन्ध में हिन्दी के रीतिकाल कवियों ने संस्कृत के इन परवर्ती ग्रंथों का मत ग्रहण किया। इस प्रकार दैवयोग से संस्कृत साहित्य शास्त्र के इतिहास की एक संक्षिप्त उद्धरणी हिन्दी में हो गई।" इससे आसानी से यह कल्पना की जा सकती है कि रीति काव्य का विश्लेषण कितना कठिन है। जिस

आलोचक का संस्कृत काव्य शास्त्र पर अधिकार है, वही रीतिकालीन काव्य का सही विश्लेषण कर सकता है। प्रस्तुत लेखक ने इस काल के कवियों को तीन वर्गों में रखा है - रीति ग्रंथकार कवि, रीतिबद्ध कवि और रीतिमुक्त कवि। यह वर्गीकरण अत्यन्त समीचीन एवं वैज्ञानिक है। रीति ग्रंथकार कवियों के अन्तर्गत लेखक ने सत्तावन कवियों के कृतित्व का विश्लेषण किया है। यद्यपि, उनके रचित काव्यशास्त्रों की कमियों को दिखाया है, तथापि उसका कारण भी बताया को इससे लेखक की तटस्थता और शोधपरक दृष्टिकोण व्यक्त हैं। रीतिबद्ध कवियों को भी लेखक ने "रीति ग्रंथकार कवि" के प्रकरण में रखा है। जिन कवियों की कविताएँ अधिक प्रभावोत्पादक है, उनका विश्लेषण विस्तार से किया गया है। बीच-बीच में लेखक ने अपना मत व्यक्त किया है, जैसे "यदि प्रबन्ध काव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है।" आलोचना में उनकी पैनी दृष्टि का एक उदाहरण हूँ - "जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति जितनी ही अधिक होगी उतना ही वह मुक्तक रचना में सफल होगा। यह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप से वर्तमान है। इसी से वे दोहे ऐसे छन्द में इतना रस भर सके हैं। इनके दोहे क्या हैं, रस के छोटे-छोटे छींटे हैं। शुक्लजी की यह उक्ति हिन्दी साहित्य जगत् में आर्ष वाक्य बन गयी।

इसके बाद का प्रकरण है, "रीतिकाल के अन्य कवि"। इसके अन्तर्गत इतिहास लेखक ने छियालिस कवियों को रखा है और यह प्रकरण तिहत्तर पृष्ठों का है। इसमें रीतिमुक्त कवियों की कृतियों का विवेचन है। इस प्रकरण में लेखक ने रीतिमुक्त कवियों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। शुक्लजी के ही शब्दों में "यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि भाषा पर अचूक अधिकार जैसा इनका था वैसा और किसी कवि का नहीं।" जहाँ भी अपना मत व्यक्त करना हो, लेखक ने निडर होकर, सबल शब्दों में व्यक्त किया है। कुल मिलाकर रीतिकाल का विवेचन एक सौ सत्तावन पृष्ठों में है।

ग्रन्थ के आधे भाग में आधुनिक काल का विवेचन हुआ है। गद्य के विकास की विभिन्न अवस्थाओं को लेकर लेखक ने उसे तीन उत्थानों में बाँटा है। प्रथम प्रकरण के आरम्भ में व्रजभाषा गद्य का वर्णन किया है। उसके बाद खड़ी बोली गद्य का क्रमिक विकास दर्शाया गया है। आधुनिक काल का दूसरा प्रकरण "गद्य साहित्य का आविर्भाव है। उसके बाद का प्रकरण नये गद्य साहित्य का सामान्य परिचय है। इसके बाद, गद्य की हर विधाका स्वतन्त्र विवेचन किया है। इसके बाद, काव्य को लेकर उसे भी तीन उत्थानों में बाँटा है। अनुक्रमणिका मात्र पैंतालीस पृष्ठों की है। इसमें संदर्भ ग्रन्थों एवं लेखकों का नामोल्लेख है, जिनसे लेखक ने ज्ञान संचित किया है। इतनी लम्बी अनुक्रमणिका शुक्लजी के न रुकनेवाले प्रयत्न एवं शोधात्मक दृष्टि का ज्वलन्त प्रमाण है। शायद ही किसी लिखक ने इतने ग्रन्थों का अध्ययन किया होगा।

उपसंहार

शुक्लजीकृत "हिन्दी साहित्य का इतिहास" में, कालक्रम का भंग नहीं हुआ है। विषयों का तथा प्रवृत्तियों का वर्गीकरण ठीक हुआ है। कालों का वर्गीकरण एवं नामकरण जो शुक्लजी ने किया है, वह मनमाना नहीं है, पूर्वनियोजित है। आलोचकों ने उन पर जो आपत्तियां उठायी हैं, उसका उत्तर पहले ही उन्होंने दिया है। शुक्लजी के बाद भी अनेक विद्वानों ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा है। इनमें से प्रसिद्ध हैं डॉ.रामकुमार वर्मा और हजारी प्रसाद द्विवेदी। डॉ.रामकुमार वर्मा का हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, "पी-एच.डी." का शोध प्रबन्ध है। अतः विज्ञ लेखक ने शिलालेख, पट्टे परवाजों आदि के उद्धरण द्वारा हर बात का प्रमाण दिया है। हजारी प्रसाद द्विवेदीजी का उद्देश्य "शान्ति निकेतन" में हिन्दीतर भाषियों को हिन्दी साहित्य के सांस्कृतिक पक्ष को समझाना था। वह हिन्दी साहित्य की भूमिका मात्र है।

राजनाथ शर्मा और सोमनाथ भट्ट आदि ने हिन्दी साहित्य के जो इतिहास ग्रन्थ लिखे हैं, वे शुक्लजीकृत इतिहास पर आधारित हैं। वे दोनों क्या अधिकांश परवर्ती विद्वानों ने उसी को आधार बनाया है। अन्य भाषाओं के साहित्यों के इतिहास लेखकों ने भी शुक्लजीकृत इतिहास के शिल्प को अपना लिया है। श्री बालशौरी रेडडी ने इसी आधार पर हिन्दी में "तेलुगु साहित्य का इतिहास" लिखा है। ये सब शुक्लजी कृत इतिहास की वैज्ञानिकता का प्रमाण है। इसीलिए हिन्दी साहित्य के इतिहास के अनेक ग्रन्थों के प्रकाशन के बाद भी, शुक्लजीकृत हिन्दी साहित्य का इतिहास का महत्व अक्षुण्ण रहता है।

SMT L.MUTHULAKSHMI
SR.TRANSLATOR
MADURAI DIVISION



हिन्दी भाषा शिक्षण में व्याकरण का स्थान

श्रीमती बी.वेण्माल

मुख्य टंकक

हिंदी विभाग

मदुरै मंडल

1. भाषा शिक्षण बहुआयामीय और बहुमुखी प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को समझने के लिए इसके मुख्य आयामों पर विचार करना अनिवार्य है। ये आयाम हैं - भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान, विधि सिद्धांत, परीक्षण सिद्धांत, समाजशास्त्र, प्रौद्योगिक सिद्धांत। भाषा विज्ञान भाषा के स्वरूप, संरचना, और प्रकार का व्याख्यात्मक वर्णन प्रस्तुत करता है। भाषा अधिगम की समस्याओं को समझने में मनोविज्ञान (विशेषतः भाषा मनोविज्ञान) से सहायता मिलती है। प्रथम भाषा और द्वितीय भाषा सीखने की प्रक्रिया में अन्तर होता है या नहीं? यदि "हाँ" तो प्रथम भाषा के अनुभव का उपयोग द्वितीय भाषा सीखने में किस रूप में किया जा सकता है? इन प्रश्नों का उत्तर भाषा मनोविज्ञान के क्षेत्र में किये जा रहे शोध कार्य से मिल सकता है। भाषा के तत्वों के चयन, परिसीमन, क्रम-विन्यास, और प्रस्तुतीकरण को संगठित करने में भाषा शिक्षण सिद्धांत को अन्य सभी आयामों से सहायता लेनी पड़ती है। परीक्षण सिद्धांत का मुख्य उद्देश्य शिक्षक को यह बताना है कि उसका शिक्षण किस सीमा तक प्रभावशाली और सफल रहा। शिक्षार्थी भाषा प्रयोग में दक्षता समाज और संस्कृति के संदर्भ में प्राप्त करता है। इस दृष्टि से भाषा शिक्षण में समाज भाषा विज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रस्तुतीकरण में जिन यंत्रों का प्रयोग होता है उनकी चर्चा भाषा संबंधी प्रौद्योगिकी के अंतर्गत होती है। यह कहा जा सकता है कि इन सारे पक्षों के सम्मिलित सहयोग से ही भाषा शिक्षण में सफलता मिलती है। मानव तत्व, और सामग्री तत्व की अन्योन्य क्रिया के फलस्वरूप ही शिक्षार्थी भाषा-कौशल संबंधी ज्ञान और भाषा प्रयोग में दक्षता प्राप्त करने में सफल होता है। भाषा शिक्षण के विभिन्न पक्षों और आयामों के पारस्परिक संबंधों को निम्नलिखित आरेख से समझा जा सकता है।

**भाषा विज्ञान - भाषा शिक्षण - परीक्षण सिद्धांत समाज भाषा विज्ञान - भाषा मनो विधान -
'विधि सिद्धांत - प्रायोगिकी**

इस आरेख में मानव तत्व को नहीं दिखाया गया है, पर मानव तत्व का इसमें सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा शिक्षण की सफलता शिक्षक और शिक्षार्थी की योग्यता और अभिप्रेरणा शक्तियों पर निर्भर करती है। शिक्षार्थी शिशु हैं या प्रौढ़? वे इस भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में सीख रहे हैं या विदेशी भाषा के रूप में? सीखने का उद्देश्य क्या है? लोगों के

साथ सम्पर्क स्थापित करना या व्यवसाय करना या साहित्य संस्कृति को समझना या पर्यटकों के लिए गाइड का काम करना या स्वान्तः सुखाय? द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा के जैसे-जैसे उद्देश्य भिन्न होंगे वैसे-वैसे उनके शिक्षण की विधि और सामग्री भिन्न होगी। शिक्षकों की सफलता निर्भर करेगी उनकी योग्यता और कुशलता पर।

सैद्धांतिक व्याकरण, भाषा विशेष का व्याकरण और शैक्षिक व्याकरण - तीनों ही व्याकरण हैं। तीनों के उद्देश्य भिन्न हैं। अतएव तीनों में अलग-अलग तत्वों पर बल दिया जाता है।

द्वितीय भाषा शिक्षण में व्याकरण से कितनी सहायता मिलती है, मिल सकती है? इस प्रश्न का उत्तर देने के पूर्व कई अन्य प्रश्नों पर विचार करना होगा।

3. व्याकरण क्या है? यह प्रश्न बहुत ही महत्वपूर्ण है। कुछ लोगों के लिए व्याकरण शुष्क नियमों की तालिका है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनके लिए व्याकरण का अर्थ होता है दर्शन। दूसरी ओर बहुतेरे ऐसे लोग हैं जो व्याकरण से शुद्ध भाषा लिखने और बोलने की कला सीखते हैं। व्याकरण चाहे कला हो या विज्ञान या दर्शन, प्रस्तुत संदर्भ में व्याकरण से अर्थ है वाक्य संरचना के वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक अध्ययन से। व्याकरण वाक्यों का सूचीपत्र नहीं होता, नहीं हो सकता है। वाक्यों का सूचीपत्र तैयार करने का अर्थ होगा वाक्य-अंश का निर्माण करना। भाषा के अन्तर्गत वाक्यों की संख्या अनन्त होती हैं। इससे स्पष्ट ही है कि किसी भी भाषा के कुल वाक्यों को सूचीबद्ध नहीं किया जा सकता है। मानवीय भाषा की सृजनात्मकता का एक प्रमाण यह भी है कि उसमें नये वाक्यों की रचना होती रहती है। विश्व का एक बहुत बड़ा आश्चर्य यह है कि इस अनन्त लीला को मानव शिशु बड़ी सहजता से बहुत ही थोड़े समय में अपने जीवन का अंग बना लेता है। यह कैसे संभव हो पाता है? क्या मानव शिशु में अनन्त वाक्यों को छाँटने की शक्ति होती है? उत्तर है "नहीं"। प्रत्येक मानव शिशुभाषा सीखने की क्षमता के साथ जन्म लेता है। और वह एक नहीं, अनेक भाषाएं सीख सकता है। आवश्यकता है उस वातावरण की जिसमें उसे स्वच्छन्द रूप से भाषा से खेलने का अवसर मिले। मानव शिशु तो वाक्यों को सुनकर ही उनके आधारभूत नियमों को निकाल लेता है और फिर इन्हीं नियमों के सहारे नये वाक्यों की रचना करता है। नियमों की संख्या सीमित होती है, पर इन सीमित नियमों के आधार पर अनेकानेक वाक्यों की रचना की जा सकती है। व्याकरण का मुख्य उद्देश्य होता है अनन्त वाक्य समूह के अन्तर्निहित सिद्धांतों की सीमित व्यवस्था का विवेचनात्मक वर्णन करना। व्याकरणिक व्यवस्थाओं के अन्तर्गत उन विकल्पों और संबंध-शृंखलाओं का विश्लेषण किया जाता है जिनके द्वारा हम यह समझते हैं कि वाक्यों का निर्माण कैसे होता है और वाक्यों के सांचे कैसे एक दूसरे से जुड़े होते हैं।

इससे मानव को उस क्षमता का भी ज्ञान होता है जिसके द्वारा वह सीमित नियमों की व्यवस्था का उपयोग कर अनन्तवाक्यों का सृजन करता है। भाषीय इकाइयों के अनिवार्य और वैकल्पिक घटकों और उपघटकों का वर्गीकरण करना तथा उनके पारस्परिक संबंधों की व्याख्या करना व्याकरण का काम है। भाषा शिक्षण में व्याकरण से अर्थ उस व्यवस्था से है जिसके द्वारा शिक्षार्थियों में भाषिक योग्यता के साथ ही साथ भाषा प्रयोग की योग्यता भी आए।

4. भाषा सीखने की क्रिया में शिक्षार्थी मात्र नहीं होता है। वह वस्तुतः कर्ता होता है। वह भाषा को सुनता है और उसके नियमों के आधार पर एक लघु व्याकरण की रचना कर लेता है। धीरे-धीरे किन्तु निश्चित रूप से वह इस व्याकरण को बृहत व्याकरण का रूप देता है। भाषा सीखने के लिए यह अनिवार्य है कि शिवार्थी को उस भाषा के वातावरण में पनपने का अवसर मिले।

अब प्रश्न उठता है -- व्याकरण क्यों? इस प्रश्न का एक ही उत्तर नहीं हो सकता। भिन्न-भिन्न स्तरों पर इसका उत्तर भिन्न-भिन्न होगा। स्नातकोत्तर स्तर पर "व्याकरण व्याकरण के लिए" पढ़ाया जा सकता है। इसका उद्देश्य होगा विद्यार्थियों को व्याकरण के चक्रव्यूह में ले जाकर भाषा के चक्रों से परिचय कराना। विद्यालीय स्तर पर विद्यार्थियों को व्याकरण के मूल मंत्रों से परिचित कराना चाहिए। जिन वाक्यों या पदबन्धों के सांचों और प्रयोगों को वे ठीक से नहीं जानते हैं उनका अभ्यास कराना चाहिए। कुछ विद्यार्थियों को उपचारी व्याकरण से लाभ होगा।

शिक्षकों के लिए व्याकरण के मूल तत्वों और सांचों को जानना अनिवार्य है। इसीके सहारे तो वे "क्यों" प्रश्नों का उत्तर विश्वास के साथ दे पायेंगे। कक्षा में यदि कोई विद्यार्थी यह पूछे कि मैंने कहा, मैंने सुना तो शुद्ध है पर मैंने सुनता क्यों अशुद्ध माना जाता है तो व्याकरण की सहायता से शिक्षक उचित उत्तर देने में सफल होगा। यहां जिस व्याकरण की संकल्पना की जा रही है वह वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक दोनों ही होगा। इस तरह के व्याकरण से वाक्य-सांचों और वाक्य प्रकारों के संबंध को समझा जा सकता है। सरल और कठिन संरचना का वर्गीकरण व्याकरणिक तत्वों के आधार पर किया जा सकता है। उदाहरणके लिए नीचे लिखे वाक्य को देखिए -

उससे खाया क्यों नहीं जा सकता?

यह वाक्य प्रश्न सूचक है। यहां कर्मवाच्य का प्रयोग हुआ है। बल के लिए मूल क्रिया "खाया" को दूसरे स्थान में रखा गया है। साथ ही "सकना" क्रिया भी है। संरचना की दृष्टि से यह जटिल वाक्य है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से जिस संरचना को हम जटिल मानते हैं वह शैक्षिक दृष्टि से भी जटिल हो - ऐसी कोई बात नहीं है। ऐसा तो कहा जा सकता है कि भाषा विज्ञान के आधार पर किये गये विश्लेषण से शिक्षक लाभ उठा सकते हैं। निम्न लिखित वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाने में व्याकरणिक नियमों की सहायता की जा सकती है।

1. यह गाड़ी पाटना जाएगी।
2. यह पांच बजे छूटेगी।

पाटना जानेवाली गाड़ी पांच बजे छूटेगी।
जो गाड़ी पाटना जाएगी वह पांच बजे छूटेगी।
वह गाड़ी जो पाटना जाएगी पांच बजे छूटेगी।

व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध वाक्यों की रचना करने की योग्यता तो अनिवार्य है ही, साथ ही विद्यार्थियों में उस योग्यता की भी आवश्यकता होगी जिसके द्वारा वे विभिन्न परिस्थितियों में संदर्भानुकूल वाक्यों का सही प्रयोग कर सकें।

5. आज व्याकरण के कई साँचे हमारे सामने हैं- संरचनात्मक, व्यवस्थापरक, वैज्ञानिक, रूपान्तरण, प्रजनक, कारकीय, संबंधीय एवं गुरुजी के व्याकरण के आधार पर लिखे गये व्याकरण। भाषाविदों का व्याकरण शिक्षकों के लिए जटिल होता है। यहां तो द्वितीय भाषा के विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए ऐसे व्याकरण की रचना करनी है जिससे उन्हें भाषा की व्यवस्था समझने और अपनाने में सहायता मिले। शिक्षकों के लिए ऐसा व्याकरण चाहिए जिसमें वाक्यों और प्रयोगों का सुव्यवस्थित वर्णन हो। उदाहरण के लिए अंग्रेजी में "क्वर्ग" के व्याकरण को लिया जा सकता है। आजकल शैक्षिक व्याकरण के नाते लगाये जा रहे हैं। शैक्षिक व्याकरण से हमारा आशय है विद्यार्थियों के दो प्रकार्यात्मक व्याकरण से -- भाषाविदों के व्याकरण से नहीं। भाषाविद अपने दर्शन में इतना खो जाता है कि धरती पर जाने की बात ही भूल जाता है। शिक्षक इस धरती की समस्याओं में इतना सुलझ जाता है कि उसके ऊपर उड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता।

वाक्य संरचना के मूल नियमों से तो विद्यार्थियों का परिचय दो-तीन वर्गों में कराया जा सकता है पर प्रबन्ध व्याकरण, शैली व्याकरण और शब्द व्याकरण के नियमों और प्रयोगों को अपनाने में वर्षों लगसकते हैं। अभी तक हमारा ध्यान इस ओर गया ही नहीं है। हमारे विद्यार्थी वाक्यों की रचना तो कर लेते हैं पर वाक्यों को मिलाकर तार्किक ढंग से उन्हें प्रबंध में संवारने में अपने को असमर्थ पाते हैं। उनकी समस्या है- किस संदर्भ में क्या कहना चाहिए,

कैसे कहना चाहिए? किस शब्द का प्रयोग किस शब्द के साथ सहज रूप में किया जा सकता है? भाषा को ठीक से समझकर प्रयोग करने के लिए शब्द-व्याकरण का अध्ययन ठीक से करना होगा। नीचे लिखे वाक्यों को देखिए:-

क) काले बादल मंडरा रहे हैं।

ख) पानी बरसना चाहिए।

ख) वाक्य में चाहिए से वक्ता के अनुमान या अध्याहार की ओर संकेत है।

ख) चाहिए के स्थान में निम्नलिखित वाक्य अशुद्ध होगा:-

पानी बरसना होगा ।

होगा शब्द का प्रयोग इस संदर्भ में नहीं किया जा सकता है। हिन्दी शिक्षण के लिए आवश्यकता उस तरह के व्याकरण की है जैसा पालो ने अंग्रेजी के लिए (ए ग्रामर ऑफ वर्ड्स)

6. व्याकरण के किन अंगों को कितने परिणाम में किस स्तर पर विद्यार्थियों के लिए प्रस्तुत करें क्या सारे नियमों और अपवादों को एक साथ ही बता दें? शैली और रजिस्टर व्याकरण का प्रयोग किस स्तर पर करना ठीक होगा? द्वितीय भाषा शिक्षण की दृष्टि से ये सारे प्रश्न महत्वपूर्ण हैं। स्कूल स्तर पर संरचना के सारे नियमों को बता देना होगा। विश्वविद्यालयीय स्तर पर शैली और रजिस्टर की सूक्ष्म विशेषताओं पर प्रकाश डालना उचित होगा। उद्देश्यीकरण के हेतु शब्दों के क्रम में परिवर्तन किस प्रकार किया जाता है और इससे अर्थ एवं बल में क्या अन्तर आता है - इन बातों की चर्चा विश्वविद्यालयीय स्तर पर ही की जानी चाहिए।

7. व्यापारिक कोटियों और नियमों को किस रूप में प्रस्तुत करना होगा? पहले कहा जा चुका है कि भाषा विज्ञान के विद्यार्थी व्याकरण के चक्रव्यूह में प्रवेशकर अद्भुत आनन्द का अनुभव करते हैं। व्याकरण की गुत्थियों को सुलझाने में उन्हें सुख मिलता है। द्वितीय भाषा सीखने में विद्यार्थी व्याकरण का सहारा इसलिए ढूँढते हैं कि उन्हें विश्वास रहता है कि व्याकरण की सहायता से वे भाषा को सफल प्रयोग करना अच्छी तरह सीख सकेंगे। यहां बल है प्रयोग पर - नियमों पर नहीं। इस दृष्टि से यह उचित होगा। हम वाक्यों का प्रयोग विभिन्न संदर्भों में करें। फिर विद्यार्थियों से नियम निकलवाएं। उन नियमों के सहारे नये वाक्यों की रचना करवाएं। इस तरह विद्यार्थी प्रयोग के द्वारा व्याकरण के नियमों को अपनाने में सफल होंगे।

8. इस संदर्भ में व्याकरण का मुख्य उद्देश्य है अधिगम की क्रिया को सहज बनाना। पाठ्य-सामग्री निर्माण में, अशुद्धियों के वर्गीकरण में, व्यतिरेकी विश्लेषण में उपचार सामग्री प्रचार करने में व्याकरण की सहायता ली जा सकती है। व्याकरण नीरस है या सरस? व्याकरण अपने आप में न तो नीरस है और नही सरस। व्याकरण लिखनेवाले और पढ़ानेवाले इसे या तो नीरस बना देते हैं या सरस।

द्वितीय भाषा शिक्षण में व्याकरण का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह योगदान ऐसा होना चाहिए जिससे हम केवल भाषा की संरचना को ही समझाने में सफल न हो अपितु विद्यार्थियों की सहायता विभिन्न संदर्भों में विभिन्न संरचनाओं को प्रयोग करने में भी कर पाएं। कक्षा में प्रयोग के लिए ऐसा व्याकरण चाहिए जिसमें रूप पर बल न हो, प्रयोग की प्रधानता हो --- जिससे भाषा सीखने और सिखाने में सहायता मिले कि भाषा के विषय में शास्त्रार्थ करने में।

9. इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं।

- क) विभिन्न संदर्भों में हिन्दी के प्रयोग का सर्वेक्षण कर आधुनिक हिन्दी का उसी तरह का व्याकरण बनाना चाहिए जैसे क्वर्क ने अंग्रेजी का बनाया है।
- ख) हिन्दी के सांचों का वर्णनात्मक व्याकरण तैयार करना चाहिए। उदाहरणके लिए हानंबी के "गाइड" को देखा जा सकता है।
- ग) विद्यार्थियों के लिए हिन्दी के मूल 1000 शब्दों का शब्द-व्याकरण लिखना चाहिए। नमूने के रूप में पामर के व्याकरण को लिया जा सकता है।
- घ) शिक्षण की दृष्टि से उपचारी व्याकरण की रचना करनी चाहिए। इसका आधार व्यतिरेकी विश्लेषण और त्रुटि विश्लेषण होना चाहिए।

SMT.B.VENMAL
CHIEF TYPIST
Hindi DEPARTMENT
MADURAI DIVISION



स्मृति के पल

नरेन्द्र मोदी जी

माननीय प्रधान मंत्री, भारत

बचपन से ही

मेरा नाता

रेलवे से रहा।

रेलवे स्टेशन से रहा।

रेल के डिब्बे से रहा।

रेल के यात्रियों से रहा।

कल से मैं यहीं

रेलवेके परिसर में

ठहरा हूँ।

चारों तरफ रेलवे के माहौल से
मुझे मेरे बचपन से जोड़ दिया।

शायद पहली बार

पूरा समय बचपन, वे रेल के

डिब्बे, वे यात्री, सबकुछ

मेरी आँखों के सामने

जिंदा हो गया।

वे यार्दे बहुत ही भावुक थीं।

यहाँ सबका अपनापन

बहुत भाया।

सभी कर्मयोगी भाईयों को

धन्यवाद...

अब तो मुझे बार-बार

यहाँ आना होगा।

फिर बचपन की स्मृतियों के
साथ नए संकल्प, संभावनाएँ
बनेंगी।

माँ गंगा का प्यार और आशीर्वाद

हमारे देश को निर्मल बनाएं,

हमारी सोच को निर्मल बनाएं,

यही प्रार्थना।'

साभार -डीरेका पत्रिका



क्या आप जानते हैं?

श्रीमती एन.एस.वीणा

वरिष्ठ लिपिक

कार्मिक शाखा

मद्रै मंडल

आजकल अधिकांश परीक्षाओं के प्रश्नपत्र बहुविकल्पीय (उत्तर का विकल्प सहित) प्रश्न पत्र हैं। तो पाठकों की जानकारी के लिए विभिन्न प्रतियोगिता सामग्री से इसका संकलन किया हूँ। अपने आप का परीक्षण लीजिए।

1. राज्य जिनमें जनगणना-2011 के अनन्तिम आँकड़ों के अनुसार महिला साक्षरता दर उच्चतम एवं न्यूनतम है, वे हैं क्रमशः

- | | |
|----------------------|--------------------------|
| (a) केरल और बिहार | (b) केरल और झारखण्ड |
| (c) केरल और राजस्थान | (d) केरल और उत्तर प्रदेश |

2. जनगणना-2011 के अनन्तिम आँकड़ों पर आधारित निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक उत्तर प्रदेश के लिए सही नहीं है?

- (a) उत्तर प्रदेश की जनसंख्या का 25% से कम शहरी क्षेत्र में रहता है।
(b) उत्तर प्रदेश भारत में सर्वाधिक शहरी जनसंख्या वाला राज्य है।
(c) इलाहाबाद उत्तर प्रदेश का सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला है।
(d) 'कवाल नगर' दस लाख जनसंख्या से अधिक वाले नगरों की श्रेणी में आते हैं।

3. हरिकेन 'इरेना' ने किस देश में अतिशय क्षति पहुँचाई थी?

- | | | | |
|-----------|---------------|-----------|---------------------------|
| (a) जापान | (b) फिलिपीन्स | (c) स्पेन | (d) संयुक्त राज्य अमेरिका |
|-----------|---------------|-----------|---------------------------|

4. लन्दन ओलम्पिक में रजत पदक जीतने वाले निम्नलिखित में से कौन हैं?

- | | |
|-----------------|---------------|
| 1. सायना नेहवाल | 2. गगन नारंग |
| 3. सुशील कुमार | 4. विजय कुमार |

5. निम्नलिखित में से किसने अप्रैल, 2012 में एशियन बिलियर्ड चैम्पियन का खिताब जीता?

- | | |
|-----------------|--------------------|
| (a) अंजू ठाकुर | (b) अशोक शाण्डिल्य |
| (c) पंकज आडवाणी | (d) तरुणदीप राय |

6. जून, 2012 में भीषण आग ने श्रीनगर में दस्तगीर साहिब के पवित्र स्थल को क्षतिग्रस्त कर दिया। निम्नलिखित में से कौन दस्तगीर साहिब के रूप में जाने जाते थे?

- (a) बहाउद्दीन जकारिया (b) सैयद अब्दुल जिलानी
(c) ख्वाजा बाकी बिल्लाह (d) कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी

7. नवम्बर, 2011 में दक्षिण शिखर सम्मेलन कहाँ आयोजित हुआ था?

- (a) मालदीव (b) म्यांमार
(c) नेपाल (d) श्रीलंका

8. निम्नलिखित में से कौन-सा देश वर्ष 2018 शीतकालीन ओलम्पिक कामेजबान किया?

- (a) फ्रांस (b) जर्मनी
(c) जापान (d) दक्षिण कोरिया

9. अब की बातें अच्छी तरह याद हैं तो कुछ पुरानी यादों को भी ताज/कर लें! मार्च, 2012 में सम्पन्न चतुर्थ ब्रिक्स (BRICS) शीर्ष सम्मेलन के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

	देश	प्रतिनिधि
(a)	ब्राजील	डिल्मा रॉजेफ
(b)	चीन	हु जिन्ताओ
(c)	रूस	व्लादिमिर पुतिन
(d)	दक्षिण अफ्रीका	जैकब जुमा

10. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही नहीं है?

- (a) जनगणना-2011 के अनन्तिम आँकड़ों के अनुसार, उत्तर प्रदेश की जनसंख्या ब्राजील की जनसंख्या से अधिक है।
(b) मैरीकॉम ने लन्दन ओलम्पिक-2012 में मुक्केबाजी में काँस्य पदक जीता।
(c) 'विश्व स्तनपान सप्ताह' वर्ष 2012 में 1 से 7 अगस्त तक मनाया गया।
(d) लन्दन ओलम्पिक-2012 के उद्घाटन दिवस समारोह में भारतीय टीम का ध्वजवाहक विजय कुमार था।

11. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही नहीं है?

- (a) बहुचर्चित 'गॉड पार्टिकल' हिग्स बोसॉन है।
- (b) क्षेत्रफल के अनुसार दमन और दीव सबसे छोटा संघ राज्य क्षेत्र है।
- (c) भारत में सबसे बाद के रैमन मैग्सेसे पुरस्कार विजेता कुलन्देई फ्रांसिस हैं।
- (d) लन्दन ओलम्पिक-2012 में भारत ने चार काँस्य पदक जीते।

12. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

- 1. अग्नि-II प्रक्षेपास्त्र सतह से सतह मारक क्षमता 2000 किमी है।
- 2. हेले थॉर्निंग शिम्ट डेनमार्क की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री है।
- 3. 3 जून को 'अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
- 4. 'द अनटोल्ड स्टोरी' बीएम कौल द्वारा लिखी गई।

2011 की जनगणना पूर्व जनगणनाओं से कई दृष्टि से विशिष्ट है और भारत के बारे में गहरी जानकारी पायेंगे!

13. जनगणना-2011 के अनन्तिम आँकड़ों के अनुसार भारत की जनसंख्या का कितना प्रतिशत उत्तर प्रदेश में रहता है?

- (a) लगभग 19%
- (b) लगभग 18%
- (c) लगभग 17%
- (d) लगभग 16%

14. भारत के सकल घरेलू उत्पाद में वर्ष 2010-11 में कृषि और सम्बन्धित क्षेत्रों का योगदान कितना रहा है?

- (a) लगभग 20%
- (b) लगभग 15%
- (c) लगभग 10%
- (d) लगभग 8%

15. जनगणना-2011 के अनन्तिम आँकड़ों के आधार पर निम्नलिखित राज्यों को साक्षरता प्रतिशत के अनुसार अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए और नीचे दिए कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए

- 1. नागालैण्ड
- 2. हिमाचल प्रदेश
- 3. सिक्किम
- 4. त्रिपुरा

16. जनगणना-2011 के अनन्तिम आँकड़ों के अनुसार निम्नलिखित राज्यों में से किसका जनसंख्या-घनत्व 100 से कम है?

- (a) नागालैण्ड (c) मिजोरम
(b) मेघालय (d) मणिपुर

17. वर्ष 2010-11 में निम्नलिखित देशों में से कौन-सा भारत के निर्यात उत्पादों के लिए शीर्षस्थ लक्ष्य था ?

- (a) यूएई (b) यूएसए (c) चीन (d) सिंगापुर

18. वर्ष 2010-11 में भारत से माल और सेवा का निर्यात भारत के जीडीपी का कितना प्रतिशत था?

- (a) 26% (b) 24% (c) 22% (d) 20%

19. जनगणना-2011 के अनन्तिम आँकड़ों के अनुसार, भारत की जनसंख्या स्त्रियों का प्रतिशत कितना है?

- (a) 49.80 (b) 48.46 (c) 47.98 (d) 47.24

20. जनगणना-2011 के अनन्तिम आँकड़ों के अनुसार, उत्तर प्रदेश की जनसंख्या का वर्ष 2001-11 के दौरान दशकीय वृद्धि दर थी

- (a) 25.07% (b) 21.00% (c) 20.30% (d) 20.09%

21. तेरहवें वित्त आयोग की सिफारिशों का प्रावधान किस अवधि से सम्बद्ध है।

- (a) 2005-10 से (b) 2009-14 से (c) 2010-15 से
(d) 2014-19 से

हिंदी पत्रिका में हिंदी भाषा की जानकारी भी अवश्य होनी चाहिए।

22. एक का विलोम शब्द चुनिए ।

- (a) दो (b) अधिक
(c) बहुत (d) अनेक

23. औरत की जोड़ी

- (a) व्यक्ति (b) मनुष्य
(c) मर्द/आदमी (d) पति

24. देश में विदेश से माल आने का कार्य
(a) आगमन (b) प्रत्यागमन
(c) आयात (d) निर्यात
25. पूरब और उत्तर के बीच की दिशा
(a) अग्निकोण (b) उदीची
(c) प्राची (d) ईशान
26. जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे कहते हैं
(a) विशेष्य (b) विशेषण
(c) विधेय (d) प्रविशेषण
27. प्रत्येक प्रश्न के वाक्य को (a), (b), (c) और (d) में विभक्त किया गया है, वाक्य के जिस खण्ड में अशुद्धि है, उसे चिह्नित करना है, यदि कोई अशुद्धि नहीं है तो (d) चिह्नित करें।
(a) वह पौधा (b) बड़ा विशाल वृक्ष
(c) बन गया है (d) कोई त्रुटि नहीं
28. (a) पुलिस द्वारा चोरी (b) का माल बरामद
(c) हो गया है (d) कोई त्रुटि नहीं
- निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द चुनिए।
29. सार्वजनिक रूप से किया गया ऐलान
(a) विज्ञापन (b) प्रचार (c) प्रसार (d) घोषणा
30. जीतने की इच्छा
(a) आकांक्षा (b) जिज्ञासा (c) जिजीविषा (d) जिगीषा
31. बहुत तेज वर्षा हो रही है। इसमें प्रविशेषण कौन-सा शब्द है
(a) तेज (b) बहुत (c) वर्षा (d) बहुत तेज
-

भारत: एक नजर में

श्रीमती एन.एस. वीणा
वरिष्ठ लिपिक
कार्मिक शाखा
मदुरै मंडल

अवस्थिति	विवरण
आकार	त्रिकोणीय
क्षेत्रफल	3287263 वर्ग किमी (विश्व का 2.4%)
जनसंख्या	1210193422 (विश्व की 17.5%)
उत्तर से दक्षिण लम्बाई	3214 किमी.
पूर्व से पश्चिम चौड़ाई	2933 किमी
समस्त स्थलीय सीमा	15200 किमी
समुद्री सीमा	6100 किमी
समुद्री तट रेखा	7516.6 किमी
प्राकृतिक सीमाएँ	उत्तर-हिमालय पर्वत, दक्षिण-हिन्द महासागर, पूर्व-बंगाल की खाड़ी, पश्चिम अरब सागर
दक्षिणतम बिन्दु	इन्दिरा प्वाँइन्ट (अण्डमान एवं निकोबार द्वीप में)
उत्तरी बिन्दु	इन्दिरा कोल (जम्मू-कश्मीर)
पश्चिमी बिन्दु	गौर माता (गुजरात)
पूर्वी बिन्दु	किबिधु (अरुणाचल प्रदेश)
मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा	कन्याकुमारी (तमिलनाडु)
क्षेत्रफल की दृष्टि से	सातवाँ स्थान (विश्व) में
सबसे बड़ा राज्य (क्षेत्रफल)	राजस्थान (342339 वर्ग किमी)
सबसे बड़ा राज्य (जनसंख्या)	उत्तर प्रदेश (199581477)
सबसे छोटा राज्य (क्षेत्रफल)	गोवा (3702 वर्ग किमी)
सबसे छोटा राज्य (जनसंख्या)	सिक्किम (607688)
सबसे ऊँचा जलप्रपात	कुचीकुल (शिमोगा जिला, बाराही नदी पर, कर्नाटक, 455 मी)
सबसे बड़ी झील	चिल्का झील (ओडिशा)
सबसे लम्बी नहर	इन्दिरा गाँधी नहर (राजस्थान)
सबसे बड़ा डेल्टा	सुन्दर वन (पश्चिम बंग)

सबसे बड़ी कृत्रिम झील	गोविन्द सागर (भाखड़ा नांगल)
सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान	मासिनराम (मेघालय)
सर्वोच्च पर्वत शिखर	K ₂ (गॉडविन ऑस्टिन) कश्मीर
सबसे विशाल गर्त	लोनार झील (महाराष्ट्र)
सबसे लम्बी तट रेखा वाला राज्य	गुजरात (1600 किमी)
सबसे लम्बी तट रेखा वाला	आन्ध्र प्रदेश (1000 किमी)
सबसे सघन आबादी वाला राज्य	बिहार (1102 प्रति व्यक्ति/वर्ग किमी)
सबसे लम्बा हिमनद	सियाचिन ग्लेशियर
सबसे ऊँची झील	देवताल झील (गढ़वाल)



SMT. N.S.VEENA
SENIOR CLERK
PB, MDU DIVISION

भारतीय रेलवे क्षेत्रों के मुख्यालय

जोन	मुख्यालय
उत्तर रेलवे (NR)	नई दिल्ली
पश्चिम रेलवे (WR)	चर्चगेट, मुम्बई
दक्षिण-मध्य (SCR)	सिकन्दराबाद
दक्षिण-पूर्व (SER)	कोलकाता
मध्य रेलवे (CR)	मुम्बई सेंट्रल
दक्षिण रेलवे (SR)	चेन्नई
उत्तर-पूर्वी (NER)	गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)
पूर्वी रेलवे (ER)	कोलकाता
उत्तर-पूर्वी सीमान्त रेलवे (NEFR)	मालेगाँव (गुवाहाटी)
पूर्वी मध्य रेलवे (ECR)	हाजीपुर (बिहार)
उत्तर-पश्चिम रेलवे (NWR)	जयपुर
पूर्वी तटवर्ती रेलवे (ECR)	भुवनेश्वर
उत्तर-मध्य रेलवे (NCR)	इलाहाबाद
दक्षिण-पश्चिम रेलवे (SWR)	हुबली (धारवाड़, कर्नाटक)
पश्चिम-मध्य रेलवे (WCR)	जबलपुर (मध्य प्रदेश)
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे (SECR)	बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
कोलकाता मेट्रो (KMR)	कोलकाता

पृथक् राज्यों का निर्माण

- * स्वतन्त्रता के पश्चात् से भारत में नए राज्यों के निर्माण को लेकर अनेक माँगें हुई हैं; जैसे-उत्तरांचल (उत्तर प्रदेश), झारखण्ड (बिहार), छत्तीसगढ़ (मध्य प्रदेश), तेलंगाना (आन्ध्र प्रदेश), विदर्भ (महाराष्ट्र), बोडोलैण्ड (असम), गोरखालैण्ड (पश्चिम बंगाल), कोडगु (कर्नाटक), पाण्डिचेरी, दिल्ली इत्यादि।
- * इनमें से कुछ राज्यों के निर्माण की माँग को स्वीकार करते हुए नए राज्यों का गठन किया गया है; जैसे-उत्तराखण्ड, झारखण्ड और छत्तीसगढ़ को वर्ष 2000 में क्रमशः उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश से पृथक् कर राज्यों का निर्माण किया गया।
- * इन राज्यों के गठन का निर्णय केन्द्र सरकार ने व्यावहारिक समस्याओं को देखते हुए लिया; जैसे-अधिक जनसंख्या व विशाल क्षेत्रफल के कारण प्रशासनिक दृष्टि से उत्तम प्रबंधन न हो पाना, सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा होना आदि।

SMT. N.S.VEENA
SENIOR CLERK
PB, MDU DIVISION

कैसे जीना है?

श्री पी.सुन्दर रामन
मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक
मदुरै जंक्शन, मदुरै

कैसे जीना है? यह एक ऐसा प्रश्न है कि सभी इसका उत्तर ढूँढते-ढूँढते थक जाते हैं। आदमी को ऐसा नहीं होना चाहिए, मनुष्य को ऐसा वेसा नहीं करना चाहिए। ऐसे उपदेश यहाँ-वहाँ से हमें मिल ही जाते हैं। लेकिन आदमी का क्या कर्तव्य है आदमी को किस प्रकार जीवन ज़ापन करना है। मनुष्य क्या करे? इनका उपदेश देकर सही रास्ते पर मार्गदर्शित करनेवाले धर्मगुरु, धर्मग्रन्थ बिरले ही मिलते हैं। किसी ने कहा हमें पक्का मालुम है कि क्या-क्या नहीं करना है लेकिन मालुम नहीं क्या करना है इसलिए शुरु से हमारी सोच पॉजिटिव साईड की ओर नहीं होता! क्या नहीं करना है कि ओर अधिक प्रेरित होता है!

श्री कृष्ण का मार्ग भगवतगीत में है। बौद्ध ज्ञानी का मार्ग जेन है। मुगलों का एक प्रभाग सूफी मार्ग है। इस मार्ग के अनुयायियों को “सूफी ज्ञानी” के नाम से जाना जाता है। जिस ढंग से ईसाई धर्म परिवर्तन, मुसलमान धर्म परिवर्तन हो जाता है वैसे ही हम सूफी धर्म के लिए परिवर्तित नहीं हो सकते हैं। ज्ञान प्राप्ति के बाद ही आप सूफी कहलाने योग्य बनेंगे। बिना ज्ञान के आप सूफी नहीं बन सकते अर्थात् ज्ञान प्राप्ति के बाद आप सूफी बन सकते हैं। यहाँ पर ज्ञान ही मापदंड है।

सूफियों की जीवनी, सूफियों की कहानी आदि बहुत रोचक होते हैं। प्रकृतिपरक होते हैं। उसमें कृत्रिमता का नामोनिशान तक नहीं रहता।

कलील जिपिरान लिखते हैं कि मैं एक दिन खेत के बीचों बीच खड़ा रहा। वहाँ बिजूका (scare crow) था। “उसे देखकर मुझे इतनी हँसी आयी मैंने उससे पूछा “इस खेतो के बीच भयानक रात में अकेले खड़े रहते हो, तुम्हें किसीका डर नहीं है? तुरंत उसने कहा “मुझे किसीका डर नहीं है! मुझे देखकर पक्षियाँ डरते हैं! डरकर उड़ जाते हैं। असल से मैं बहुत खुश हूँ उनकी डर को देखकर प्रफुल्लित हो जाता हूँ। डरके मारे जब पक्षियाँ उड़ जाती हैं वह दृश्य देखते ही बनती है।

मैंने थोड़ी देर सोचने के बाद कहा “हाँ, जब दूसरे हमसे डरते हैं तब हमें आनन्द मिलता है”। बिजूका ने आगे कहा - मेरे अंदर कुछ नहीं है, केवल धास फूस है। जिनके देह में कुछ नहीं होता उन्हें इस सुखानुभवकी प्राप्ति होगी”

हम भी कलील जिपिरान की बिजूका की तरह हैं। हमारे शरीर के अंदर कुछ भी नहीं है। ज्ञानशून्य भी है। बिजूकाके अंदर घास फूस है हमारे शरीर हड्डी एवं रक्त से भरा हुआ है।

जानी कोई हमें देखकर पश्चाताप के मारे कहता है कि तुम्हारे शरीर में कुछ भी नहीं है तो हम कहते "मैं तो महान हूँ। मेरे अधीन इतने लोग हैं। मेरे शक्ल देखते इतने लोग डरे। इतने लोग मेरी प्रशंसा की। मेरा काम देख इतने लोग अचम्बित हुए। उस बिजूकासे हम कितना कद ऊँचा? वह बिजूका अचल है, हमें चलने की शक्ति है। फिर भी जीवन में एक इंच भी आगे नहीं बढ़ें अचल उस बिजूकासे हम बेकार हैं। वे कम से खेती की रक्षा करते हैं लेकिन मानव को इसकी चेतना तक नहीं रहती कि शरीर के अंदर शून्य है। इस मान के अभाव में दूसरों के सम्मुख नाटक करते हैं कि हम ही सबकुछ हैं। इस दिखावे के मायाजाल में फंसे मानव जीवोन्नति के बिना वैसे ही समाप्त हो जाता है।

एक बार सूफी जानी रास्ते पर आ रहे थे। सामने एक किसान जारहा था। उसके पीछे गाय। किसान के हाथ में गाय को बांधकर लाने की रस्सी थी। जो गाय के साथ बाँधा हुआ था। किसान चलते जा रहा था। गाय भी पीछे-पीछे जा रही थी।

किसान को देखकर सूफी जानी हँसे। फिर उन्होंने किसान से पूछा कि तुम गाय के साथ आ रहे हो या गाय तुम्हारे साथ आ रहा है? यह क्या बेतुक प्रश्न है गाय ही मेरे साथ चल रहा है। यह किसान का उत्तर था। फिर सूफी जानी ने कहा- फिर छोड़ो रस्सी को। किसान ने कहा रस्सी छोड़ेंगे तो गाय भाग जाएगी। इसका मतलब है तुम ही गाय के साथ बंधे हुए हो न कि गाय तुमसे। अगर गाय तुम्हारे साथ चल रहा है तो रस्सी छोड़ने के बाद भी तुम्हारे साथ ही चलना है। अगर रस्सी छोड़ेंगे तो गाय भागेगी। गाय भागेगी तो उसके पीछे तुम भी भागोगे। लेकिन पहले तुम भागोगे तो गाय तुम्हारे पीछे नहीं भागेगी। इसलिए गाय के साथ तुम ही बंधे हुए हो।



SHRI P.SUNDAR RAMAN
CHIEF HEALTH INSPECTOR
MADURAI JUNCTION
MDU DIVISION

मदुरै मंडल में देखने लायक स्थान

श्री एस. श्रीनिवासन
वरिष्ठ अनुवादक
तिरुच्चि मंडल

मदुरै मंडल की स्थापना 16 मई, 1956 को हुई थी और दक्षिण रेलवे के सबसे बड़ा मंडल है जिसका 1363.06 रूट किलोमीटर है। यह मंडल प्रधान कारखानों की सेवा करता है, जैसे कि तूतुकुडि में नमक, रसायन, समुद्र व्यापार, मछली और ऊर्जा सृजन, तिरुनेलवेली तालैयुतु और तुलुक्कप्पट्टि में सिमेंट, वाडिपट्टी में ट्रैक्टर, विस्दुनगर में दाल, दिंडुक्कल में मशीन उपकरण, शिवकाशी में पटाखे एवं मुद्रण, रामेश्वरम में मछली पकड़ना, तेनी में मसाले और मदुरै में कपड़ा चमेली। मदुरै मंडल की सेवा प्राप्त अधिकांश क्षेत्र तमिल भाषा का पारंपरिक केंद्र, कला और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। अधिक संख्या में तीर्थ स्थान और पर्यटक आकर्षक केंद्र हैं, जैसे मदुरै, तिरुच्चेंदूर, पलनी, तिरुप्परंकुंड्रम, रामेश्वरम, श्रीविल्लिपुत्तूर, कोडैक्कानल, कुट्टालम, तिरुनेलवेली आदि।

मदुरै शहर का इतिहास

मदुरै शहर जो भारत के अत्यंत पुराना शहर है का इतिहास ईसापूर्व काल के संघ काल से प्रारंभ होता है। जब विजयनगर सम्राट के शासन के अधीन आया तब इसका महत्व कई दृष्टिकोण से बढ़ा। 16 और 18 शताब्दी के दौरान, मदुरै नायक राजाओं द्वारा शासित था, जिसमें अति प्रमुख रहे तिरुमलै नायक्कर। संघ कवि नक्कीरर, सुंदरेश्वर की लीलाएँ तिरुविलैयाडल से जुड़े हुए हैं, जो आज भी मंदिर के उत्सव संप्रदाय के अंश के रूप में, नाटक द्वारा रचे जाते हैं।

संघ काल या तमिल साहित्य के स्वर्ण युग में ईसा पूर्व काल और पहली सहस्राब्दी के प्रारंभ में, महाकाव्यों की रचना हुई थी। मदुरै, तमिल संघ का गुरुकुल या शिक्षण का आधार स्थल रहा। संपूर्ण मदुरै शहर, अति श्रेष्ठ मीनाक्षी सुंदरेश्वर मंदिर को केंद्र बिंदु रखकर विकसित हुआ था।

ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में मेगस्तनीज मदुरै आए थे। उसके बाद कई लोग रोम और ग्रीस से मदुरै आए और पांड्य राजाओं के साथ व्यापार किये थे। पांड्य राजाओं का पारंपरिक शत्रु चोल राजा द्वारा कब्जा किए जाने तक अर्थात् 10वीं शताब्दी तक मदुरै स्वर्णमय रहा।

चोल राजाओं ने मदुरै पर 920 से 13वीं शताब्दी के प्रारंभ तक शासन किया था। 1223 ईसवी में पांड्यों ने अपना राज्य पर पुनः विजय प्राप्त किया और पुनः समृद्ध हुआ।

पांड्य राजाओं ने तमिल भाषा का समर्थन जी-जान से किया। 1323 में मदुरै सहित पांड्य राज्य, दिल्ली सुल्तान तुगलक के शासन का अधीन हो गया।

1371 में हंपी के विजय नगर वंश ने मदुरै पर विजय पाया और उसके बाद मदुरै, विजयनगर राज्य का एक अंग बना। 1530 ई. में श्री कृष्ण देवराय के देहांत के बाद, नायकों ने स्वतंत्र होकर स्वयं शासन करने लगे। तिरुमलै नायक्कर, नायक राजाओं में बहुत प्रसिद्ध रहे (1623-1659)। वे ही मदुरै के चारों ओर अनेक इमारतों के निर्माण का आधार रहे। मीनाक्षी मंदिर के राजगोपुरम, पुदुमंडपम और तिरुमलैनायक्कर राजमहल उनकी कला रुचि के जीवित नमूने हैं। उसके बाद धीरे-धीरे मदुरै ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन में आने लगा। 1781 में मदुरै पर शासन करने के लिए एक अंग्रेज़ी प्रतिनिधि को ईस्ट इंडिया कंपनी ने नियुक्त किया। जार्ज प्राक्टर ही मदुरै के पहले कलेक्टर रहे।

रानी मंगम्माल प्रतिभाशाली, धीर-वीर-शूर महारानी थी। रानी मंगम्माल का नाम लिए बिना मदुरै का इतिहास अधूरा रह जाएगा। इतिहास साक्षी है कि तमिलनाडु में बहुत कम महिला शासक रही हैं। रानी मंगम्माल, तमिलनाडु के सक्षम और शक्तिशाली शासक रही।

मदुरै, मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। आप्पुर्डियार कोविल शैव स्थल है और कूडलनगर वैष्णवों के लिए अति प्रमुख मंदिर है, वहाँ जाने के मौके से कोई नहीं चूकते। मदुरै के पास में तिरुप्परंकुंड्रम, भगवान कार्तिकेय के प्रमुख क्षेत्रों में एक (मदुरै संघ के कवि नक्कीरर के तिरुमुरुगाट्रपडै में जिसकी आराधना की गई) है। मदुरै के पास में वैष्णव सिद्धांत के 108 दिव्य देशम में प्रमुख हैं अलगर कोविल।

औद्योगिक केन्द्र

मदुरै, चेन्नै के दक्षिण में उद्योग और कारखाने के लिए प्रमुख है। टेक्स्टाइल और लघु यंत्र ही मुख्य क्रियाकलाप हैं। मदुरै के चमेली पुष्प बहुत प्रसिद्ध है इसलिए इस पुष्प से संबंधित उद्योग अधिक संख्या में हैं।

राजपालयम

टेक्सटाइल मिल, जिन्निंग फेक्टरी, पावरलूम प्राससिंग फेक्टरी, सर्जिकल काट्टन मिल आदि राजपालयम के प्रमुख कारखाने हैं।

तूतुकुडि

यह बंदरगाह और औद्योगिक शहर है। सुप्रसिद्ध तमिल स्वतंत्रता सेनानी जिन्होंने ब्रिटीश के विरुद्ध नाव चलाया श्री वी. ओ. चिदंबरनार के नाम पर पोर्ट, पूरब पश्चिम अंतराष्ट्रीय समुद्र मार्ग के बहुत निकट है, और रेल मार्ग द्वारा अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। प्रति वर्ष बंदरगाह द्वारा किए गए कुल यातयात. लगभग 40,000,000 टन रहा।

शिवकाशी

यह शहर पटाखे, प्रिन्टिंग और दियासलाई उद्योगों के लिए विख्यात है। नेहरूजी द्वारा इस शहर को मिनी जापान कहा गया था। देश के कैलंडर एवं पटाखों के 80 प्रतिशत की मांगों की आपूर्ति यहीं से की जाती है। पटाखे भी कई देशों को निर्यात किए जाते हैं। भारत के औद्योगिक शहरों में ज्यादा उत्पाद कर, बिक्री कर अदा करनेवाले शहरों में एक है।

तुलुककप्पट्टि व तालैयुत्तु

मेड्रास सिमेंट्स और इंडिया सिमेंट्स के सिमेंट प्लांट यहाँ है।

वाडिपट्टी

यहाँ टेफे ट्रैक्टर उत्पादन इकाई है। यहाँ तैयार किए गए ट्रैक्टर देश भर काम में आता है।

तीर्थ स्थान

मीनाक्षी सुन्दरेश्वर मंदिर

श्री मीनाक्षी सुन्दरेश्वर मंदिर भारत के विशालकाय मंदिरों में से एक है। भगवान शिव की अर्धांगिनी देवी मीनाक्षी को समर्पित है। यह द्रविड वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह मंदिर भारत एवं संसार भर से पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मदुरै शहर का विकास ही इस मंदिर के आधार पर हुआ। अप्रैल-मई में 15 दिनों के लिए यहाँ चैत्र (तमिल के प्रथम महीना) समारोह मनाया जाता है। इसके लिए लाखों लोग निकटतम शहरों और गावों से आते हैं। इस मंदिर में एक गणेश • मूर्ति है जो विशिष्ट है। यह विशालकाय मूर्ति एक ही पत्थर से बना है। उसी प्रकार मंदिर के अंदर के तालाब के स्वर्ण कमल अति अद्भुत है। गगनचुंबी गोपुरम मंदिर के चारों दिशाओं में है। कहते हैं कि विश्व के नए अद्भुतों में चुने जाने के चुनाव में यह मंदिर अंतिम कड़ी तक पहुँच सका। प्रत्येक महीने हजारों विदेश पर्यटक आते हैं और लाखों भारतीय पर्यटक आते हैं।

श्रीविल्लिपुत्तूर

यह भगवान रंगनाथ स्वामी का मंदिर है। गोपूर की ऊंचाई 60 मीटर है जो दक्षिण भारत के ऊँचे गोपूरम में से एक है। इस मंदिर का रथ बड़े रथों में से एक है और इसमें धर्मग्रंथों के चित्रों का उत्कीर्णन है। भगवान विष्णु ने आंडाल को वरण किया था। आंडाल ही यहाँ प्रधान देवी है। यही गोपुरम तमिलनाडु के राजचिह्न के रूप में है।

रामेश्वरम

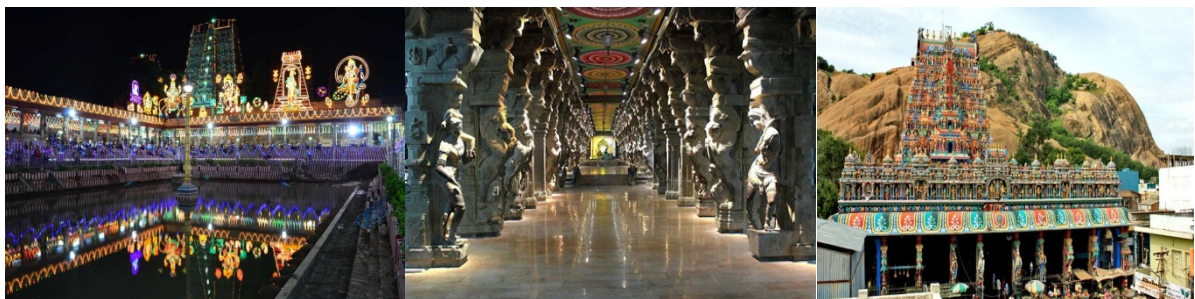
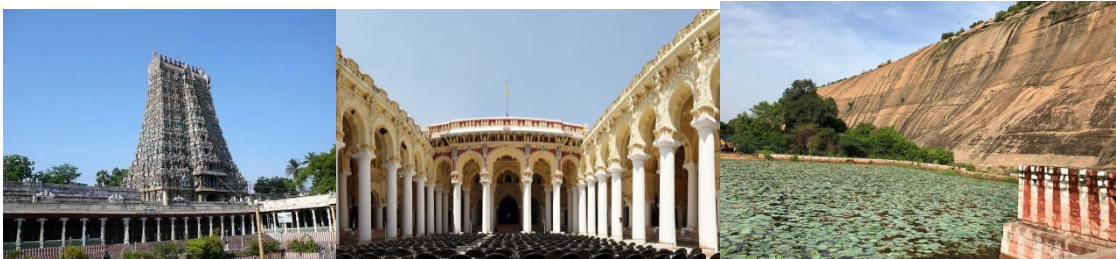
रामेश्वरम भारत के सबसे पवित्र और ऐतिहासिक शहरों में से एक है। यहां का भगवान रामनाथस्वामी मंदिर अपने लंबे गलियारा और स्नानघाट के लिए प्रसिद्ध है। हिंदू पति-पत्नी मिलकर, काशी और रामेश्वरम का दर्शन करना अपना जीवन लक्ष्य रखते हैं। यहाँ के समुद्र

को अग्नी तीर्थ कहा जाता है और धर्म के अनुसार इसमें स्नान करनेवाले के हृदय पवित्र बन जाता है। पुरानों में कहा गया है कि भगवान शिव की मूर्ति भगवान श्री राम की धर्मपत्नी देवी सीता द्वारा बनाया गया था। श्रीलंका में रावण पर विजय पाने के बाद वे वापस अयोध्या पहुँच रहे थे तब की घटना है।

रामसेतु-पुल का निर्माण भगवान राम और उनके सेना द्वारा किया गया था। स्नानघर, कोदण्डरामन मंदिर और समीप के कोरल रीफ द्वीप और अन्य समुद्री चमत्कारों के लिए रामेश्वरम प्रसिद्ध है।

धनुष्कोडी, दक्षिण भारत के पूर्वी तट के छोर पर स्थित नगर है जो दिसंबर 1964 के तूफान में नष्ट-भ्रष्ट हुआ और अब तूफान की ऐतिहासिक साक्षी के रूप में शिथिल खंडहर है। पांबन पुल पूरे विश्व में प्रसिद्ध और यह रेलवे के एक अद्वितीय रेलवे पुल है।

भगवान कार्तिकेय/सुब्रह्मण्य के षट क्षेत्रों में चार मदुरै मंडल में हैं। पळनि, तिरुच्चेन्दूर, पळमुदिरचोलै, और तिरुप्परंकुंड्रम। यहाँ जैन गुफाएँ भी हैं। इसके अलावा यहाँ तेनकाशी (कुट्टालम), एरवाडी दर्गा, आर्यकाऊ, कुलतुप्पुला, कोट्टारक्करा (शबरीमला के रास्ते में हैं) नाज़रेज (ईसाई शहर है और सबसे महत्वपूर्ण चर्च है)। मदुरै तिरुमलै नायक्कर महल, कोडैक्कानल, मेघमलै, सिरुमलै, कारैक्कुडी के कई महल, तिरुमय्यम की जैन गुफाएँ, सुरुली जैसे अनगिनत झरना, धनुष्कोडी जहाँ से राम ने श्रीलंका के लिए पुल बनाया आदि आदि कई स्थान हैं जो देखने लायक ही नहीं तन-मन को पवित्र करनेवाले भी हैं। सूची बहुत लंबी है मदुरै मंडल आप सभी का स्वागत करती है। आइये, रसास्वादन कीजिए। अविस्मरणीय स्मृति के साथ जाइये।



SHRI S.SRINIVASAN
SENIOR TRANSLATOR
TPJ DIVISION

प्रयोजन मूलक हिंदी की नवीन दिशाएं

श्री सुनिल राम

स्टेशन अधीक्षक

तूतुक्कुडी, मदुरै मंडल

भाषा संप्रेषण का सशक्त साधन है। दिल के उमंगों, दिमाग के विचारों को दूसरों तक पहुंचाने में भाषा के अलावा और कोई सशक्त माध्यम क्या हो सकता है? हमारी भाषाएं अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं बल्कि संस्कृति की वाहिका भी हैं। इस देश में अनेक भाषाएं होने के बावजूद हर भारतवासी प्रत्येक भाषा का उतना ही सम्मान करता है जितना अपनी मातृभाषा का।

भारत की भौगोलिक विविधता ही अनेक भाषा, बोलियों के जन्म का मूल कारक है इस भिन्नता के बावजूद सबका मूल चितन एक ही है। भाषा परिवार में विविधता होने पर भी सभी भाषाएं समरूपी हैं और सभी में समसंरचनात्मकता है।

भाषा के प्रमुख आयाम:-

भाषा अध्ययन के दो प्रमुख पहलू होते हैं 1. संरचनात्मक पहलू 2. प्रयोजनपरक। संरचनात्मक पहलू इस पक्ष पर प्रकाश डालता है कि भाषा क्या है, न कि भाषा क्या करती है। संरचनात्मक पहलू के अंतर्गत वाक्य, पदबंध शब्द आदि व्यवस्था-सापेक्ष होती हैं। प्रयोजन परक भाषा, भाषा के प्रयोजन से जुड़ जाती है अतः संरचनात्मक पक्ष शरीर है तो प्रयोजन परक उसकी आत्मा है।

प्रयोजनमूलक आयाम का संबंध साहित्येतर विषयों से होता है। साहित्यिक भाषा व्यक्ति - सापेक्ष होती है। साहित्येतर भाषा समाज सापेक्ष होती है। रेलवे, बैंक, प्रशासन, विज्ञान एवं तकनीकी विभाग साहित्येतर परिधि के अंदर आते हैं। प्रयोजनमूलक हिंदी, Functional हिंदी, कामकाजी हिंदी व्यावहारिक या व्यावसायिक हिंदी होती है। प्रयोजनमूलक भाषा की अपनी विशिष्टता होती है।

1. मूल धातु से उपसर्ग शब्द लगाकर अनेक शब्द गढ़ने का सामर्थ्य= 'स्थ' से स्थित, उपस्थिति, उपस्थित, अनुपस्थित, अनुपस्थिति
2. 'ईक्षण' से निरीक्षण, परीक्षण, पर्यवेक्षण, अधीक्षण, निरीक्षक, परीक्षक, पर्यवेक्षक, अधीक्षक, विधीक्षा आदि

3. कर्मणी प्रयोग का बाहुल्यता & कार्यालयीन प्रयोग में है।

1. सूचित किया जाता है कि
2. निर्देश दिया जाता है कि
3. अनुमोदित करें
4. कार्रवाई की जाए
5. प्रमाणित किया जाता है कि

4. सहायक क्रियाओं का अधिक प्रयोग प्रयोजनमूलक हिंदी में है -
इस पत्र की पावती आज ही दे दी जाए।

5. भाषा का मानक रूप प्रधान:-

रेलवे के संदर्भ में Section Engineer के लिए अनुभाग इंजीनियर, खण्ड इंजीनियर आदि के बदले सेक्शन इंजीनियर का प्रयोग ही मानक है।

6. कार्यालयीन हिंदी अर्जित भाषा है वह सहज भाषा नहीं है।

स्वतंत्रता संग्राम के समय आम जनता तक विचारों के विनिमय के लिए आम भाषा की जरूरत महसूस की गई। स्वामी दयानंद सरस्वति से लेकर लाल, बाल, पाल जैसे महान नेताओं ने अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए हिंदी को माध्यम बनाया। 14 सितम्बर 1949 को भारत की राजभाषा के रूप में हिंदी को प्रदष्टित किए जाने के बाद कार्यालयीन हिंदी का रूप अर्जित हो गया, क्योंकि अंग्रेजी शासकों के माध्यम सरकारी नियम, ढांचा आदि बन चुके थे। हमें उस पद्धति के अनुसरण करने के लिए बाध्य हो गए थे अतः अनुवाद के सहारे शब्दों को अर्जित करना पड़ा। कार्यालयीन भाषा अपनी सहजता खोकर एक नया रूप धारण कर लिया, विशेषतः प्रयास, अभ्यास या शिक्षा के माध्यम इस भाषा का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। एक आम आदमी "पत्र भेजना" शब्द से परिचित होता है लेकिन "पत्र प्रेषित" से अभ्यास के बाद परिचित हो जाता है।

अपनी शब्द - भंडार के लिए भारतीय भाषाओं से शब्दों को ग्रहण करने में तत्पर
निवल-net -कन्नड से

पावती, आवक / जावक -मराठी से

चिल्लर, विल्लंगम, क्रय पत्र - तमिल से / उर्दू से

कार्यालयीन हिंदी में हिंदी की तीन बोलियाँ

(संस्कृत, उर्दू- फारसी मिश्रित एवं अंग्रेजी) की दृष्टि से किसी एक पारिभाषिक शब्द के लिए प्रयोग करने की छूट है।

Sanctioned के लिए मंजूर
Income के लिए आमदनी
Climate के लिए आबोहवा
Salary के लिए तनखाह
Election के लिए चुनाव
Balance के लिए बकाया

प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप होते हैं

1. कार्यालयीन या प्रशासनिक हिंदी
2. विधि क्षेत्र की हिंदी
3. सूचनापरक एवं प्रचारात्मक हिंदी
4. औद्योगिक हिंदी
5. वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिंदी
6. विज्ञापन की हिंदी
7. साहित्यिक हिंदी.

कार्यालयीन या प्रशासनिक हिंदी तक आगे देखेंगे।

प्रशासनिक हिंदी: अपने अपने कार्यालय के कार्यक्षेत्र की क्रियाविधियों के संदर्भ में जिन विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग करके कामकाज चलाया जाता है उन्हीं को प्रशासनिक हिंदी कहते हैं। प्रशासनिक हिंदी के प्रयोग में हिंदी अनुभाग जिसमें हिंदी में विशिष्ट विषय पर उपाधि प्राप्त कर्मचारी होते हैं। हिंदी विभागेतर अधिकारी एवं कर्मचारी भी शामिल होते हैं। हिंदी विभाग की कर्तव्य स्वयं हिंदी में काम करने के अलावा दूसरों को भी काम करवाना है। काम करना आसान है काम करवाना मुश्किल है। इस के लिए कई उपायों को अपनाना पड़ता है।

प्रशासनिक एवं कार्यालयीन हिंदी में सरकार एवं प्रशासन के कार्यकर्ताओं का विवरण विवेचन होता है। मसौदा टिप्पण लेखन अंतर मंत्रालयीन, मंडलाधीन एवं विभागीय पत्र-व्यवहार, संसदीय कार्य एवं प्रतिवेदन आदि इस साहित्य के अंदर आते हैं। प्रशासनिक कार्य मामूली तौर पर (1) दैनिक कार्य (2) स्थाई प्रकृति के (3) सांविधिक प्रकृति में बांटा जाता है। दैनिक कार्य के अंदर मसौदा टिप्पण लेखन, पत्रों का उत्तर, प्रशासनिक रिपोर्ट आदि आते हैं। स्थाई प्रकृति के नियम पुस्तकें, मैनुअल, फार्म आदि दूसरे प्रकार में अधिनियम, सांविधिक नियमावली आदि तीसरे प्रकार के होते हैं। रेलवे के संदर्भ में, स्टेशनों में प्रदर्शित वाणिज्यिक विषयों के, रेल के

आवागमन संवर्धित सूचनापट्टों, स्टेशन के नाम बोर्डों, उद्घोषणाएं, समय-सारणी स्टेशन संचालन नियम, भाडियों के ऊपर प्रदर्शित गन्तव्य स्टेशन दिखानेवाले बोर्डों, टिकट, टिकट लेने के लिए प्रयोग किए जानेवाले कार्यों, आरक्षण चार्टों, IVRSSystem आदि अपने ढंग का कार्यक्षेत्र होता है जिनमें प्रयोग की जानेवाली भाषा अपने विशिष्ट किस्म के होते हैं। इसके अलावा गाड़ियों के अंदर छिपकाए जानेवाले नोटिसों, पर्यटन पर केन्द्रित सूचनाओं, Toilets आदि में भी तीनों भाषाओं का प्रयोग याने क्षेत्रीय भाषा, हिंदी एवं अंग्रेजी का वर्चस्व देखा जा सकता है।

राजभाषा संगठन का प्रमुखध्येय यह रहा किराजभाषा का विकास प्रेम, प्रोत्साहन और प्रेरणा के माध्यम से हो।

यद्यपि राजभाषा के क्षेत्र में काफी उपलब्धियां हासिल की जा चुकी है फिर भी राजभाषा कार्यान्वयन को लेकर संतृप्त नहीं हो सकते हैं। उछल नहीं सकते हैं। वाणिज्यक क्षेत्रों में हिंदी आचुकी है। कार्यालयों में, कार्यालयों के फाइलों में हिंदी अपनी वास्तविक रूप में, सही माइने में आना अब भी बाकी है। आज हिंदी के पास पर्याप्तपारिभाषिक एवं तकनीकी शब्द है। लेकिन उसका प्रचलन नहीं है। व्यवहार में लानेवाले अधिकारियों एवं उच्च पद पर आसीन अधिकारियों काट्ट संकल्प, समर्पण भाव,कर्तव्य परायणता, देशप्रेम आदि बात इसमें जुड़ी हुई है।

विविधता राष्ट्र कमज़ोर नहीं होता बल्कि बलवान होता है।विविधता को मतभेदों में परिणित न करें और राष्ट्र को बलवान बनने दें।

SHRI SUNIL RAM
SS/TN
MDU DIVISION



तमिलनाडु में हिंदी का इतिहास

श्री पी.सुंदर रामन
मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक
मदुरै जंक्शन

भारत वर्ष बहुभाषी देश है। ऐतिहासिक रूप से इन सभी भाषाएं प्रधानतः संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश भाषाओं से जुड़ी हुई हैं। आजादी के साठ वर्ष में भारतवर्ष की आधुनिक भाषाओं का सम्मान बढ़ा है। आज प्रायः सभी आधुनिक भाषाएं अपने-अपने प्रदेशों में विकसित होती जा रही हैं। उन्हें शिक्षा का माध्यम बनाया गया है। गौरतलब है कि इसके वास्ते सभी भाषाएं व्यवहार में हैं और जीवन्त हैं।

भारत संघ में अनेक भाषाएं और बोलियाँ बोली जाती हैं। 2001 के जनगणना के आधार पर 1635 मातृभाषाएं एवं 122 बोलियाँ व्यवहार में हैं। अंग्रेजों के शासन काल में अंग्रेजी राजभाषा थी। जब स्वतंत्रता संग्राम पुरजोर पकड़ा तब हमारे नेताओं ने जनता तक अपने विचारों की पहुंच के लिए हिंदुस्तानी का प्रयोग किया। विविध भाषाई समूहों को एक सूत्र में बांधने के लिए हमारे नेताओं ने हिंदुस्तानी का सहारा लिया। गुजराती, मराठी, बंगाली, भाषा-भाषियों के लिए हिंदी सीखना आसान है, लेकिन द्रविड परिवार के खासकर तमिल भाषा-भाषियों के लिए हिंदी सीखना थोड़ा कठिन है। इसलिए 1918 में दक्षिण वालों को हिंदी सिखाने के उद्देश्य से हिंदी प्रचार सभा का गठन किया गया। 1925 में इण्डियन नेशनल कांग्रेस ने अपनी कार्यवाही के लिए हिंदुस्तानी को अपनाने लगा। गांधीजी एवं नेहरूजी हिंदुस्तानी के समर्थक थे और वे हिंदीतर राज्यों में हिंदुस्तानी का प्रचार-प्रसार करना चाहते थे। लेकिन ई.बी.रामस्वामी ने हिंदुस्तानी हो या हिंदी दोनों भाषाओं को स्वीकार करना नहीं चाहा। वे समझते थे कि भाषा के माध्यम से उत्तर, दक्षिण को गुलाम बनाता चाहता है।

इण्डियन नेशनल कांग्रेस ने 1937 का चुनाव जीता और सी.राजगोपालचारी 14 जुलाई 1937 को मद्रास प्रेसिडेन्सी के मुख्य मंत्री बने। वे दक्षिण में हिंदी को लाने और हिंदी का प्रचार प्रसार करना चाहते थे। 6 मई 1937 के सुदेश मित्रिरन नामक समाचार पत्र में हिंदी के पक्ष में अपना समर्थन व्यक्त करते हुए कहा कि "सभी को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी। व्यापार, व्यवसाय की बढ़ोतरी के लिए, नौकरी की अन्य विधाओं की खोज के लिए भारत में अधिकांश लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषा की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। हिंदी सीखने से ही दक्षिण भारतीयों को अन्य भारतीयों के बीच सम्मान और समर्थन मिलेगा। ग्यारह अगस्त 1937 में अर्थात् सत्तारूढ़ की एक ही महीने में उन्होंने घोषणा की कि सेकण्डरी स्कूलों में हिंदी भाषा की पढ़ाई अमल में लाई जाएगी। हिंदुस्तानी सेवा दल और हिंदुस्तानी हितैषी सभा ने

राजाजी की इस प्रस्ताव को खूब समर्थन किया।लेकिन पेरियार ई.वी.रामस्वामी और ए.टी.पन्नीर सेलवम ने इस प्रस्ताव को विरोध करते हुए 4 अक्टूबर 1937 को हिंदी विरोध सम्मेलन का आयोजन किया।लेकिन 21 अप्रैल 1938 को राजाजी ने सरकारी आदेश (G.O.) के माध्यम 125 सेकण्डरी स्कूलों में हिंदी को अनिवार्य किया। राजाजी की यह कार्रवाई से उत्तेजित दक्षिण भारतीय राजाजी और उनकी हिंदी के विरुद्ध हंगामाकरनेलगे। काला झंडा प्रदर्शन, स्कूल एवं कालेजों में धरना आदि शुरू हुआ। कानून एवं व्यवस्था भंग होने लगी। यह तब तक चला जब फरवरी 1940 में राजाजी ने अपने आदेश को वापस नहीं लिया।इस दंगे में तालमुत्तु एवं नटराजन मारे गए और पेरियार जले गए। 1 फरवरी 1938 को स्टैलिन जगदीशन नामक युवक ने हिंदी के विरुद्ध भूख हड़ताल शुरू किया और इसमें मर भी गया।29 अक्टूबर 1939को द्वितीय विश्व युद्ध में भारत की भागीदारी कोलेकर राजाजी ने कांग्रेस से इत्तीफा दिया।फिर मद्रास प्रेसिडेन्सी राज्यपाल नियम के अधीन आया21 फरवरी 1940 को तात्कालीन राज्यपाल इरस्किन ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए हिंदी को "अनिवार्य" के स्थान पर "वैकल्पिक" बना दिया.

यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि हैं, लेकिन जनता ने हिंदी की आवश्यकता को महसूस करते हुए दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के माध्यम से हिंदी सीखना शुरू की। श्री देवदास गांधी के लगन एवं अथक प्रयास से शहर के गण्य-मान्य सज्जन सर्वश्री भाष्यम अय्यंगार, टी.आर.वेंकटराम शास्त्री एन.सुंदरम अय्यर आदि हिंदी सीखने लगे हिंदी साहित्य सम्मेलन एवं देवदास गांधी ने दक्षिण भारत में हिंदी का बीज बोया। सन् 1920 तक सभा का कार्यालय जार्ज टाउन में था, उसके बाद मडलापुर में, फिर 1936 तक तिरुवल्लिकेणी में कार्यरत था. सबसे पहले प्राथमिक परीक्षा 11 मार्च 1923 को दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में चली. परीक्षा शुल्क के रूप में चार आना वसूला गया.

तिरुच्चिराप्पल्लि नेशनल हाई स्कूल, मायवरम नगरपालिका हाई स्कूल, तिरुप्पतूर नगरपालिका हाई स्कूल, तंजाऊर एवं रामनाथपुरम जिला बोर्ड के स्कूल तिरुमंगलम पी.के.नगर हाई स्कूल आदि में हिन्दी पढाने की व्यवस्था शुरू की गई.

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

1940-1946 के बीच राजनीतिज्ञों के हाथों में हिंदी खिलौना बनकर रही। अपने अस्तित्व को कायम रखने और जनता के बीच प्रतिष्ठा कमाने के लिए हिंदी को अस्त्रके रूप में प्रयोग किया। भारत की स्वतंत्रता के बाद 1947 में कांग्रेस ने सभी राज्यों को मज़बूर किया कि हिंदी को सभी स्कूलों में अनिवार्य किया जाए। मद्रास प्रेसिडेन्सी के कांग्रेस सरकार

ने ओमंदूर रामस्वामी रेड्डीयार के नेतृत्व में 1948 को स्कूलों में हिंदी को अनिवार्य किया फिर वही दंगा, वहीं भूख-हड़ताल हिंदी विरोध आंदोलन शुरू हुआ।

जब 1963में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया, धारा 3 के विरुद्ध (The English Language may, as from the appointed day, continue to be used in addition to Hindi) फिर तमिलनाडु में हंगामा मचाया गया।मई 1964 में नेहरु जी के मरने के बाद लाल बहादुर शास्त्री जो तात्कालीन प्रधान मंत्री थे आश्वासन दिया कि केन्द्र सरकार की नौकरी सिविल सेवा की परीक्षाओं में अंग्रेजी का प्रयोग जारी रहेगा। 7 मार्च 1964 को मद्रास राज्य के मुख्य मंत्री एम.भक्तवत्सलम ने मद्रास विधान सभा में त्रि-भाषा सूत्र को अमल में लाने की सिफारिश की (अंग्रेजी, हिंदी और तमिल) लेकिन जनता के बीच धरना, दंगा, कानून एवं व्यवस्था में भंग आदि के कारण दक्षिण एवं उत्तर में भी त्रि-भाषा सूत्र सही माइने में अमल में नहीं लाया गया।इंदिरा गांधी प्रधान मंत्री बनने के बाद राजभाषा संशोधित अधिनियम 1967, 16, दिसम्बर को पारित किया गया।

23 जनवरी 1968 को तमिलनाडु में त्रि-भाषा सूत्र बंद किया गया। स्कूलों में हिंदी को प्रधान्यता नहीं दी गई।NCCमें हिंदी कमान बंद किया गया।

1986 में भारत का प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने "राष्ट्रीय शिक्षा नीति" लागू की और भारत में नवोदया स्कूल का निर्माण हुआ। फिर तमिलनाडु ने इस नीति का विरोध किया. अब तमिलनाडु को छोड़कर अन्य राज्यों में नवोदया स्कूल विद्यमान हैं.

इस प्रकार हम देखते हैं कि तमिलनाडु के स्कूलों में हिंदी को step motherly treatmentही मिलता रहा। क्षेत्रीय भाषा को लेकर पढ़नेवाले विद्यार्थियों को तमिलनाडु राज्य के अंदर सम्मान और प्रतिष्ठा मिलती है। इन सबके बावजूद स्वयं सेवा संस्थानों के माध्यम हिंदी आज भी जीवित है।इसका प्रमुख कारण आधिकांश जनता की मानसिकता में बदलाव, और परिस्थितिगत परिवर्तन।आजकल के विद्यार्थी क्षेत्रीय भाषा के साथ-साथ एक और भाषा जानने में इच्छुक हैं, चाहे वह हिंदी हो या वैश्वीकरण के कारण फ्रेंचया जर्मन हो।त्रिभाषा सूत्र अपने आप लागू होता आ रहा है.

- (1) बिल गेट्स की नीति की तरह एक सड़क एक हिंदी प्रचार विद्यालय हो
- (2) जितना हो सके उतना user friendly हो
- (3) ऐसा माहौल उत्पन्न करना कि हिंदी को लोग स्वयं सीखें
- (4) हिंदी सीखने के लिए सामग्री मुफ्त के मिले

(5) भाषाई देश, जाती द्वेष, जलन, ईपर्या इन सबका मूल कारण देश प्रेम का अभाव है। यह मत भूलना कि सालों से हम कहते आए हैं, वसुदैव कुटुंबकम्तमिल में भी யாதும் ஊரே யாவரும் கேளிர்। यदि केवल हिंदी ही समस्या है तो कभी முல்லை பெரியார் की मुद्दा या कृष्ण-कावेरी की नहीं होती क्योंकि हिंदी की वहां नहीं उठी। समस्या लोगों कामनोभाव है। वाक् चातुर्य से स्वार्थवश कई नेताओं ने जनहित के बजाय स्वहित में कार्य किया। कुछ पाना है तो कुछ खोना है।

हिंदी को शैक्षणिक संस्थानों तक ले आने में हिंदी प्रचारको एवं अध्यापकों का योगदान उतना ही महत्व है जितना पौधे के लिए पानी। 1924 से अर्थात् जिस वर्ष सभा में हिंदी प्रचारक विद्यालय खोल गया उस वर्ष से सैकड़ों हिंदी प्रेमी प्रचारक की परीक्षा में उत्तीर्ण होते स्कूलों में हिंदी प्रचार का काम करते आए हैं। उन महानुभावों की कर्तव्यपरायणता कर्मठता एवं देश भाषा प्रेम के कारण स्कूलों में खासकर Matriculation एवं State Board के स्कूलों में हिंदी विद्यमान हैं। यहां पर हिंदी विषय लेकर पढ़नेवाले छात्रों की संख्या क्षेत्रीय भाषा की तुलना में कम है। फिर भी सागर में मोती ढूँढने में इन अध्यापकों का योगदान उल्लेखनीय है। ICSE, ICSE स्कूलों की बात बिल्कुल अलग है। Anglo Indian स्कूलों में भी कुछ हद तक हिंदी पढ़ाई जाती है। रेलवे स्कूलों में तमिल माध्यम के स्कूलों में हिंदी की व्यवस्था नहीं है। अंग्रेजी माध्यम वाले रेलवे स्कूलों में हिंदी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है। अन्य माध्यमों द्वारा विद्यार्थियों के बीच हिंदी भाषा के प्रति रुझान पैदा करने के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए।

SHRI P.SUNDAR RAMAN
CHIEF HEALTH INSPECTOR
MDU JUNCTION



मैं हिंदी हूँ

श्री सचिन कुमार सिंह
अनुवादक
मदुरै मंडल

मैं हिन्दी हूँ राजभाषा हूँ
मैं हूँ ज्ञान का अक्षय स्रोत
मेरा अस्तित्व कभी मिट नहीं सकता
पूर्ण विश्वास से हूँ ओत प्रोत ।

विरोध सभी विफल हो गए
कर नहीं पाए मान मर्दन
जन गण में महक रही हूँ
मैं हूँ वह सुगंधित चंदन ।

हिन्दी के आलोचक ही नहीं
सभी हिन्दी की शक्ति को पहचान गए
मुझे अपनाने को समर्थ हुए
अपनी हितार्थ को जान गए ।

संस्कृत के अमृत से पोषित
है वैज्ञानिक आधार मेरा
सरल सहज सरस हूँ मैं
दिए हैं मैंने मूर्धन्य साहित्यकार ।

चिरंजीवी साहित्य की जननी हूँ
एक सूत्र में राष्ट्र बांधती हूँ
विकास की यात्रा में सहभागी
यह विनती करना चाहती हूँ ।

राष्ट्र वही महान हूँ
निज भाषा का जहाँ सम्मान हूँ
हीन भावना से ऊपर उठना ही
समर्थ राष्ट्र की पहचान है ।

मैं हिन्दी हूँ के उद्घोष से
घर-घर में सभी अलख जगाएं
काश्मीर से कन्याकुमारी तक
संपर्क भाषा के रूप में मुझे अपनाएं।

हिन्दी का कोई विकल्प नहीं
साधना से पाया यह रूप
उदारवादी दृष्टिकोण है मेरा
आवश्यकता अनुरूप बदलती हूँ स्वरूप ।

आप सभी के विशाल हृदय में
मेरा है नित्य बसेरा
आप जब तक मेरे साथ हैं
गर्व से ऊँचा रहेगा मस्तक मेरा

SHRI SACHIN KUMAR SINGH
TRANSLATOR
MDU DIVISION

प्रकृति का प्रकोप

श्री विनय कुमार चौरसिया
वरिष्ठ लिपिक, संकर्म शाखा
मदुरै मंडल

मनुष्य अपने स्वार्थ सिद्धि और तरक्की के लिए आये दिन प्रकृति को नुकसान पहुंचा रहा है। इसी के चलते प्रकृति इतना अत्याचार सहन नहीं कर पा रही है, नतीजा असमय होने वाले प्राकृतिक आपदाएं। ऐसी घटनाएं जो प्रकृति और पर्यावरण को हानि पहुंचाएं और जान-माल का नुकसान करे, उसे प्राकृतिक प्रकोप अथवा प्राकृतिक आपदाएं कहा जाता है। आयेदिन खबरों में ऐसी भयानक खबरें हमें सुनने और देखने को मिलती हैं। बाढ़, भूकंप, जंगलों में आग, तूफान, बादल फटना, चक्रवात जैसे आपदाएं पृथ्वी पर लगातार हो रही हैं। इसे रोकना मनुष्य के बस में नहीं है। लेकिन इसके लिए जिम्मेदार मनुष्य खुद है।

मनुष्य जल, वन, मैदानों, खनिज पदार्थों और सारे प्राकृतिक साधनों का बेरोक-टोक उपयोग कर रहा है। उन्हें पर्यावरण की परवाह नहीं है। इसी कारण प्राकृतिक संतुलन का बिगड़ना लाजमी है। मनुष्य को जरूरत है कि वह इन प्राकृतिक संसाधनों का सोच समझ कर उपयोग करे। ऐसी प्राकृतिक आपदाओं का कहर सब पर टूटता है और कई लोग अपनी जाने गँवा देते हैं। भारत ने कई भीषण प्राकृतिक आपदाओं का अनुभव किया है। 1999 में गुजरात में भारी चक्रवात हुआ था, जिसमें हजारों लोग मारे गए थे।

2001 में दहला देने वाला भूकंप आज भी कोई भुला नहीं सकता है। इस भूकंप ने अहमदाबाद से लेकर सूरत, जामनगर और गांधीनगर जैसे जिलों को बुरी तरीके से प्रभावित किया था। 2014 में जम्मू कश्मीर में भीषण बाढ़ आयी थी जिसमें जान माल का काफी नुकसान हुआ था। कुछ साल पहले उत्तराखंड और केदारनाथ में बादल फटने के कारण, भूकम्प और बाढ़ दोनों आ गया था। यह भयानक घटना 2013 में हुई थी। इसकी वजह से कई लोग पानी में बह गए और उनका पता तक नहीं चला। इससे केदारनाथ मंदिर को भी भारी नुकसान हुआ था। प्रत्येक वर्ष असम जैसे राज्यों में बाढ़ जैसे हालात पैदा होते हैं, इससे वहाँ के गाँव और गरीब लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

प्राकृतिक आपदाएं कुछ वक्त के लिए आती हैं और बरसों का नुकसान करके चली जाती हैं। कई मकान और बड़े शहरों को चंद मिनटों में नष्ट कर देती हैं। इमारतें, पुल और सड़कें टूट कर बिखर जाते हैं। हर जगह ज़्याही मच जाती है। बड़ी बड़ी इमारतें ताश के पत्तों की तरह नीचे ढह जाते हैं। कई परिवार हमेशा के लिए खत्म हो जाते हैं और कभी ना भूलने वाले गम दे जाते हैं।

जिन नगरों में भूकंप और बाढ़ जैसे आपदाएं आते हैं, वे पूरी तरह से तबाह हो जाते हैं। उन्होंने बनाने में सालोंका समय लग जाते हैं। हर तरीके का संपर्क चाहे बिजली हो या मोबाइल सेवा, सब बंद पड़ जाते हैं। बाढ़ के कारण फसल बर्बाद हो जाते हैं जिससे भुखमरी जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। भूकंप अचानक आ जाता है और पूरे जगह को प्रभावित कर देता है। पृथ्वी के सतह पर अचानक कम्पन यानी लगातार हिलने के कारण, हमें झटके महसूस होते हैं, इसे भूकंप कहा जाता है।

बरसात के मौसम में अक्सर बिजली गिरने के कारण कई लोगों की मौत हो जाती है। प्रत्येक वर्ष बीस हजार से अधिक लोग बिजली गिरने के कारण मारे जाते हैं। जब उलटे दिशा से बदल एक दूसरे से टकराते हैं, तो बिजली पैदा होती है। बारिश के वक़्त लोगों को बिजली के खम्बों के पास खड़े नहीं होना चाहिए और पेड़ के नीचे भी खड़े नहीं होना चाहिए। व्यक्ति को धातु जैसी वस्तुओं से इस वक़्त दूर रहना चाहिए और ऐसे वक़्त में नहाना नहीं चाहिए।

सुनामी यानी समुन्दर तल में हलचल, दरार और अत्यधिक कम्पन के कारण होती है। इसके कारण भयानक तरंगें उठती हैं। सुनामी आस पास के इलाको, छोटे बस्तियों को नष्ट कर देती है। साल 2004 में हिन्द महासागर में भयानक सुनामी आयी थी जिसकी वजह से लाखों लोग मारे गए थे। कई लोगो का आसरा छीन गया था। सुनामी आने से पूर्व मौसम विभाग के सारे निर्देशों का पालन करें। एक फर्स्ट ऐड बॉक्स और फोन इत्यादि अपने पास रखना ना भूले। अगर पशु अपनी जगह छोड़कर जाने लगे तो इसका मतलब है, सुनामी किसी भी वक़्त दस्तक दे सकते हैं।

जब किसी जगह अचानक असंतुलित और लगातार बरसात के कारण पानी हर एक स्थान पर अत्यधिक भरने लगे, तो उसे बाढ़ कहते हैं। सड़के, रास्ते, नालों का पानी अतिरिक्त बढ़ जाने के कारण आम लोगो को मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। कई लोगों का घर डूब जाता है और पशु, पक्षी पानी में डूबकर मारे जाते हैं। यातायात के साधन सुविधा सब बंद पड़ जाते हैं। साल 2005 में मुंबई में भयानक बाढ़ आयी थी। हर वर्ष मुंबई में बाढ़ जैसे हालात पैदा हो जाते हैं।

सूखा हमारे देश की गंभीर समस्या है जिससे कृषको को हर वर्ष दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक वर्ष, महीनों तक वर्षा नहीं होती और फसले बर्बाद हो जाती हैं। मनुष्य, पशु पक्षियों को पास प्यास बुझाने के लिए जल प्राप्त नहीं होता जिसके कारण मनुष्य समेत सभी जीव जंतु मर जाते हैं। भूमिगत जल का अतिरिक्त इस्तेमाल पर्वतों का खनन, यह सब आकाल पड़ने के लिए जिम्मेदार है।

निष्कर्ष:

मनुष्य इतने रफ्तार से चल रहा है, जिसकी वजह से उसने कुदरत पर कहर ढा दिया है। उन्नति के शिखर पर पहुँचने के लिए वह पर्यावरण और संसाधनों को नष्ट कर रहा है। अगर ऐसे ही चलता रहा तो यह प्राकृतिक आपदाएं समस्त पृथ्वी को तबाह करने में कामयाब हो जायेगी और हम मूक दर्शक बनकर खड़े रहेंगे।

लगातार वनों की कटाई और नियमित रूप से हो रही प्रदूषण, प्राकृतिक आपदाओं को निमंत्रण दे रहा है। मानव अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मार रहा है और बिना सोचे समझे, प्राकृतिक संसाधनों का गलत उपयोग कर रहा है। प्रदूषण एक बेहद संजीदा समस्या है जिसके कारण पर्यावरण अपना संतुलन खो रहा है। अगर पर्यावरण संतुलन खोती है तो प्राकृतिक आपदाओं को अपने आप न्योता मिल जाता है। हमें प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए तैयार रहना होगा और ऐसी स्थिति ना देखनी पड़े, इसके लिए हम सभी को आवश्यक कदम उठाने होंगे जो प्रकृति के हित में हो।

SHRI VINAY KUMAR CHAURASIA
SENIOR CLERK/WORKS BRANCH
MDU DIVISION

★ MAN-MADE DISASTERS ★



TRAIN ACCIDENT/DERAIL



AVIATION INCIDENT (Plane crash)



SHIPWRECK (Accident)



TRAFFIC COLLISION (Road accidents)



STRUCTURAL COLLAPSE (Building collapse)



BRIDGE COLLAPSE



WILDFIRES - Human negligence like discarded cigarettes.



SPACE ACCIDENT



ARSON-The criminal setting a fire with intent to cause damage.

हिंदी अनुभाग/मदुरै - हिंदी कार्यान्वयन की कुछ झलकियाँ



रेलवे मिश्रित हायर सेकंडरी स्कूल में हिंदी माह के शुभारंभ के रूप में एक दिन एक हिंदी शब्द बोर्ड लगाया गया। हिंदी कवियों के चित्र प्रदर्शनी रखी गयी।

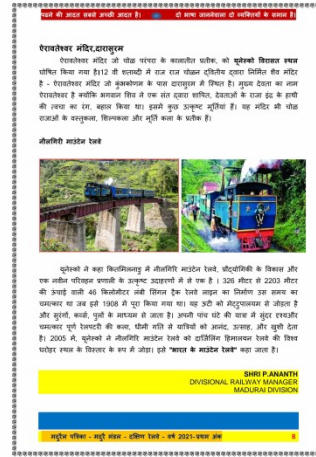
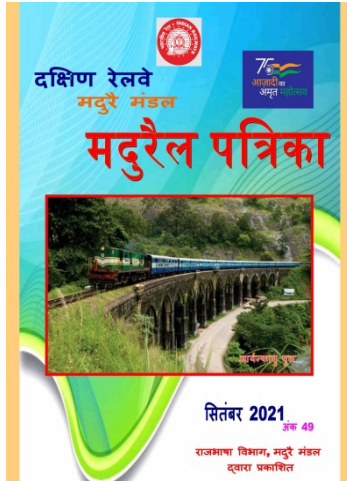
हिंदी दिवस के सिलसिले में रेलवे स्कूल के बच्चों के लिए प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन



नराकास/मदुरै के उप समिति बैठक मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में आयोजित की गयी।



मंडल कार्यालय के बैठक कक्ष में पुस्तक प्रदर्शनी



मद्रुरै मंडल के गृहपत्रिका - मद्रुरैल पत्रिका (ई-पत्रिका)



रेलवे बोर्ड स्तर पर व्यक्तिगत नकद पुरस्कार और प्रमाणपत्र का वितरण श्री पी.अनंत, मंडल रेल प्रबंधक के कर कमलों से



अधिकारियों के लिए हिंदी सुलेखन और प्रश्नमंच प्रतियोगिताओं का आयोजन

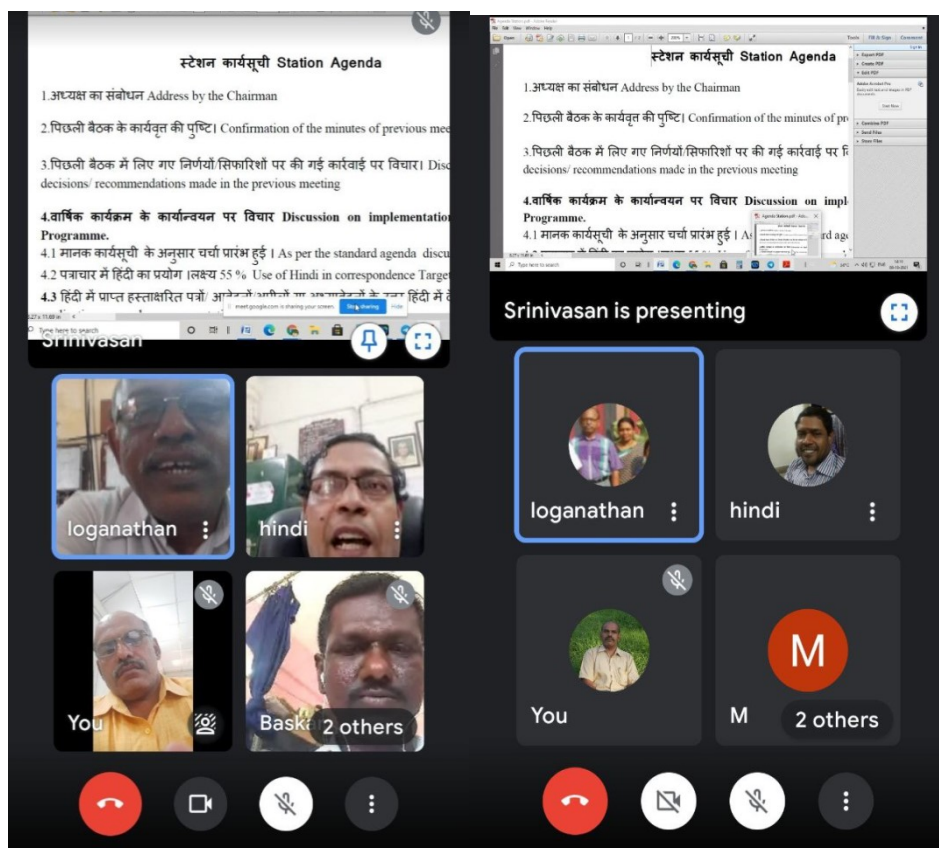


कारैक्कुडी में कार्यशाला का आयोजन



हिंदी विभाग मदुरै मंडल को लगातार चौथा वर्ष चल शील्ड





मदुरै मंडल हिंदी अनुभाग अपना सारा काम ऑन लाइन पर ही आयोजित करता है।



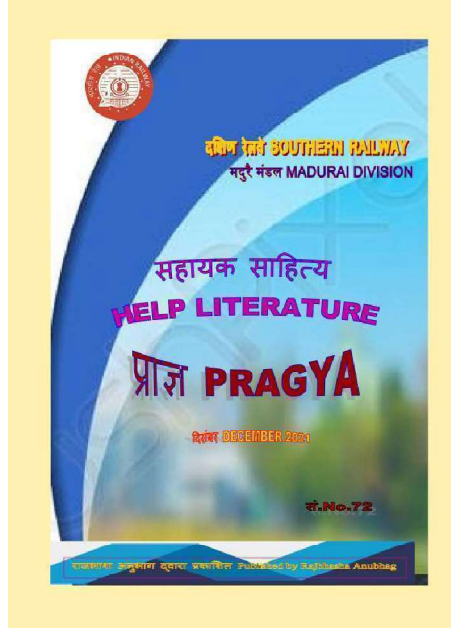
रेलवे अस्पताल/मदुरै में "जनम सूचना" संबंधी एक नया बोर्ड लगाया है।
इस बोर्ड में हिंदी में भी सूचना लिखी जाती है।



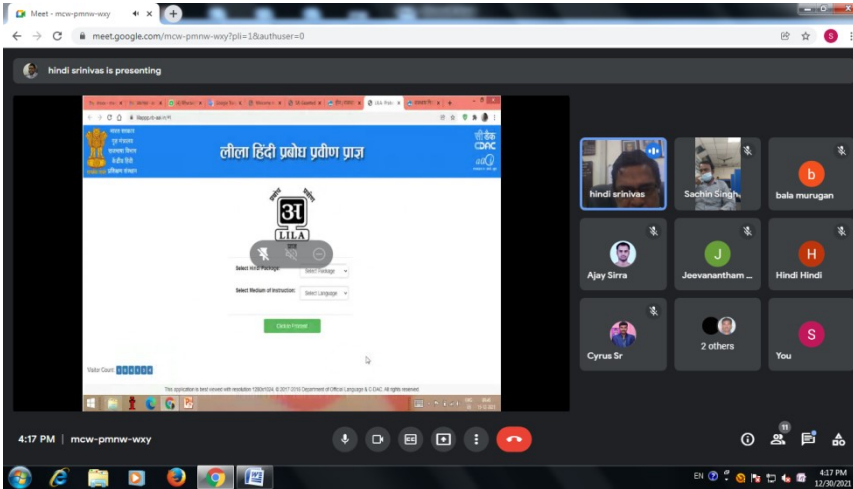
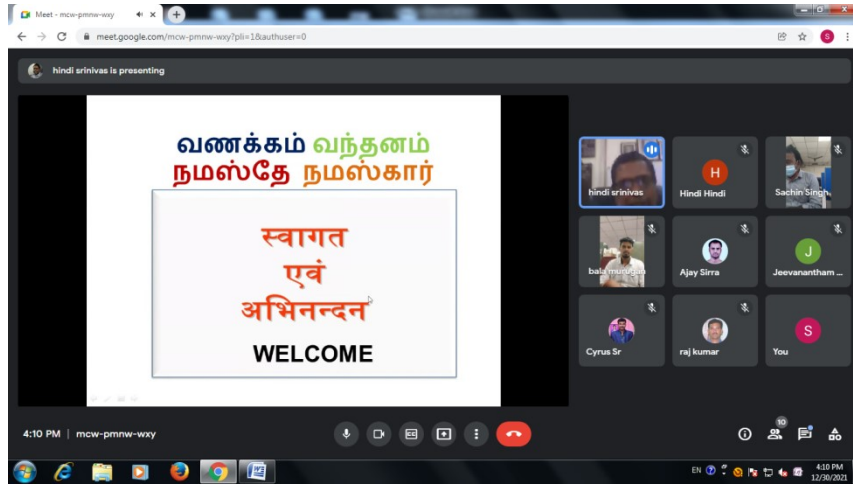
तिरुनेलवेली यांत्रिक डिपो के कर्मचारियों को संबोधित करते हुए राजभाषा अधिकारी/मदरै



मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक - ऑन लाइन में



अब तक मदुरै मंडल 75 सहायक साहित्य प्रकाशित किया है। हाल ही के सहायक साहित्य



ऑन लाइन में हिंदी कार्यशाला

Powered by : eReleGo.com



▲ மதுரை ரயில்வே கோட்ட அலுவலகத்தில் காந்தி உருவப்படத்துக்கு மாலை அணிவித்து மரியாதை செலுத்திய கோட்ட மேலாளர் பத்மநாபன் அனந்த்.

ரயில்வே கோட்ட அலுவலகத்தில் காந்தி பிறந்த நாள் விழா

மதுரை: மதுரை கோட்ட ரயில்வே அலுவலகத்தில் மகாத்மா காந்தி பிறந்த நாள் விழா கொண்டாடப்பட்டது. மதுரை கோட்ட ரயில்வே மேலாளர் பத்மநாபன் அனந்த், சுடுதல் கோட்ட ரயில்வே மேலாளர் ரமேஷ்பாபு மற்றும் அலுவலர்கள் காந்தி உருவப்படத்துக்கு மாலை அணிவித்து மரியாதை செலுத்தினர்.

மேலும் காந்தி பற்றிய வினாடி-வினா நிகழ்ச்சி இணையதளத்தில் நடைபெற்றது. அதில் 65 ரயில்வே ஊழியர்கள், 135 பொதுமக்கள், மாணவர்கள் உட்பட 200 பேர் பங்கேற்றனர். இதற்கான ஏற்பாடுகளை ஆட்சிமொழி அதிகாரி சீனிவாசன் செய்திருந்தார்.

Dinamani-Madurai



மதுரை ரயில்வே கோட்ட அலுவலகத்தில்... மதுரை ரயில்வே கோட்ட அலுவலகத்தில் கோட்ட மேலாளர் பத்மநாபன் அனந்த், காந்தியடிகளின் படத்திற்கு மாலை அணிவித்து மரியாதை செலுத்தினார். தொடர்ந்து சுடுதல் கோட்ட ரயில்வே மேலாளர் தண்ணீர் ரமேஷ் பாபு, ரயில்வே உயர் அதிகாரிகள், அலுவலர்கள் ஆகியோரும் மரியாதை செலுத்தினர்.

இதேபோல் காந்தி ஜெயந்தியையொட்டி இணையதளம் வாயிலாக வினாடி-வினா போட்டி நடைபெற்றது. போட்டியில் பொதுமக்கள் மற்றும் ரயில்வே ஊழியர்கள் என 300-க்கும் மேற்பட்டோர் பங்கேற்றனர். இப்போட்டிக்கு ஆட்சி மொழி அதிகாரி சீனிவாசன் ஏற்பாடு செய்திருந்தார்.

வெற்றியாளர்கள் முடிவு இணையதளத்தில் பின்னர் வெளியிடப்படும் எனத் தெரிவிக்கப்பட்டுள்ளது.



வினாடி-வினா போட்டி

மதுரை, அக. 3-
மதுரை ரெயில்வே
அலுவலகத்தில் மகாத்மா
காந்தி பிறந்தநாள் விழா
நடத்திது இதில் கோட்ட
மேலாளர் பத்மநாபன்
அனந்த், சுடுதல் மேலாளர்
தண்ணீர் ரமேஷ்பாபு
மற்றும் அதிகாரிகள் கலந்து
கொண்டனர்.

கொண்டு காந்தி உருவப்
படத்திற்கு மலர் ஊவி
மரியாதை செலுத்தினர்.
அப்போது காந்தி பற்றிய
வினாடி-வினா நிகழ்ச்சி
இணையதளம் மூலம் நடத்த
பட்டது. இதில் மாணவ,
மாணவிகள் ரெயில்வே
ஊழியர்கள் உள்ளடக்க
கும் மேற்பட்டோர் கலந்து
கொண்டனர்.

Railway Division commemorates Gandhi Jayanti

Madurai : Madurai Division of Southern Railway observed Gandhi Jayanti at Railway Junction on Saturday. Divisional Railway Manager (DRM) Padmanabhan Ananth garlanded the picture of Mahatma Gandhi. After this, Additional DRM Thanneeru Ramesh Babu and other officials paid floral tribute to Mahatma's picture. In view of Gandhi Jayanthi, MDSR organised a quiz competition online. As of 3 pm, more than 200 people participated in the quiz. Officer in charge for official language Srinivasan had made arrangements for the competition. ENS



दक्षिण रेलवे की 'पुस्तकें बुला रही हैं' योजना शुरू

मदुरै/दक्षिण भारत

दक्षिण रेलवे के मदुरै मंडल में 10 अंशकालीन पुस्तकालय हैं। कर्मचारियों को पुस्तकालय की ओर आकृषित करने के लिए एक नई योजना शुरू की गयी है। पुस्तकें बुला रही है - योजना। हाल ही में खरीदी गयी, बच्चों की किताबें, उपवास, नाटक आदि विद्याओं की पुस्तकें भले मंगलवार कर्मचारियों के लिए प्रदर्शित की जाएगी। अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी टी.रमेश बाबू ने निर्देश दिया कि जितना संभव हो हर विद्या के दो-

लीन पुस्तकों को प्रदर्शित किया जाए ताकि सभी को आकृषित किया जा सके। इस योजना की शुरुआत मंगलवार को तिरुनेलवेली के भारतीयार पुस्तकालय में शुरू की गयी है। शुभारंभ के रूप में साहित्यिक सेतुबंधन का विमोचन किया गया था। साहित्यिक सेतुबंधन में किसी हिंदी कवि की चुनी गयी कविताओं को लिया जाता है और उसके समतुल्य तमिल कविताओं को भाव सहित दिया जाता है। इस महीने हिंदी कवि रवींद्र और तमिल कवि विभी औषयार की कविताओं की तुलना की गयी है। इसका विमोचन आज

तिरुनेलवेली में एक महीना एक विभाग के अंतर्गत साहित्य शाखा के कार्यालय में कर्मचारियों के बीच करेज न बैगन के वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर एस.बाबुमुरली द्वारा किया गया। प्रथम प्रति वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर विजली जी कस्तुरवामी ने प्राप्त किया। लगभग 30 कर्मचारियों ने इसमें भाग लिया। शेषको डिजिटल कवि प्रदान की गई। केवल दो प्रतियां पुस्तकालय में संदर्भ ग्रन्थ के रूप में रखा गया है। मोबाइल पर हिंदी एप पर संगोष्ठी भी चलायी गयी। अनुवादक एस.श्रीनिवासन ने इस सत्र का संचालन किया।

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी टी.रमेश बाबू ने कहा कि हमने तय किया है कि जितना संभव हो हर विधा की दो-तीन पुस्तकों को प्रदर्शित कर कर्मचारियों को आकर्षित करेंगे। योजना की औपचारिक शुरुआत तिरुनेलवेली के भारतीयार पुस्तकालय में हुई।



नई योजना पुस्तकें बुला रही हैं की शुरुआत पर पुस्तकें प्रदर्शित करते रेलवे कर्मचारी।

शुभारंभ के रूप में साहित्यिक सेतुबंधन का विमोचन किया गया। साहित्यिक सेतुबंधन में किसी हिंदी कवि की चुनी गयी कविताओं को लिया जाता है और उसके समतुल्य तमिल कविताओं को भाव सहित दिया जाता है। इस महीने हिंदी कवि रहीम और तमिल कवयित्री ओव्यायार की कविताओं की तुलना की गई है।

रमेश बाबू ने बताया कि तिरुनेलवेली में "एक महीना एक विभाग" के अंतर्गत यांत्रिक शाखा के कार्यालय में कर्मचारियों के बीच वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर (वैरेज व वैगन) एस. बालमुरुगन द्वारा विमोचित इस अंक की प्रथम प्रति वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर (बिजली) जी. करुणस्वामी ने प्राप्त की।

लगभग 30 कर्मचारियों ने इसमें भाग लिया। सबको डिजिटल प्रति प्रदान की गई और बतौर संदर्भ दो प्रति पुस्तकालय में रखी गई। साथ ही मोबाइल में हिंदी ऐप पर संगोष्ठी भी हुई। राजभाषा अधिकारी ए. श्रीनिवासन और हिन्दी अनुवादक एस. श्रीनिवासन ने इस सत्र को संभाला।

ਸਾਹ ਸਿਮਰ ਜਪਾਨਾ ਜੈ

ह्यांतूनच कर्मिणांना ह्या शंभरालाच 'मीनी' या नाव देण्यात आले.

मद्रै/दक्षिण भारत

इस बैठक में महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि जनवरी 2022 से शुरू होने वाले हिंदी वर्ग पूर्ण रूप से ऑनलाइन पर होगा। इसी प्रकार



वार्तालाप प्रशिक्षण, कार्यशाला आदि का भी आयोजन ऑनलाइन पर कराने की व्यवस्था की जाएगी। इसका पहला कदम के रूप में आज संपन्न बैठक भी ऑनलाइन बैठक रही। कर्मचारियों की संख्या की कोई अब सीमा नहीं है। इच्छुक सभी कर्मचारियों को वर्ग में शामिल किया जा सकता है। इससे लक्ष्य 2025 के पहले ही हासिल होने की संभावना है। राजभाषा अधिकारी ए. श्रीनिवासन ने बैठक का संचालन किया।



शुभ लाभ

प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक ने मदुरै जंक्शन में हिंदी प्रदर्शनी और पुस्तकालय का किया निरीक्षण



मदुरै / शुभ लाभ ब्यूरो।

मदुरै मंडल में दक्षिण रेलवे के प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक रवि वल्लूरी ने मदुरै जंक्शन में हिंदी प्रदर्शनी और पुस्तकालय का निरीक्षण किया।

वे दक्षिण रेलवे के मुख्य राजभाषा अधिकारी का अतिरिक्त कार्यभार संभाल रहे हैं। इस मौके पर हिंदी विभाग ने कर्मचारियों द्वारा किये जाने वाले काम की प्रदर्शनी रखी गई। रवि वल्लूरी ने प्रदर्शनी को अवलोकन करने के साथ हिंदी पुस्तकालय का निरीक्षण भी किया। मदुरै जंक्शन में 'मैथिली शरण गुप्त'

नामकरण वाला हिंदी पुस्तकालय है। पुस्तकालय वाचनालय सुविधायुक्त है। यहाँ विभिन्न विधाओं की लगभग 2600 हिंदी किताबें हैं।

निरीक्षण के बाद सुझाया कि इस पुस्तकालय के पुस्तकों की सूची को नेट पर प्रदर्शित किया जाए और अधिकाधिक कर्मचारियों को आकर्षित किया जा सके।

राजभाषा अधिकारी ए. श्रीनिवासन ने रवि वल्लूरी को मदुरै मंडल में विभिन्न स्टेशनों पर किये जा रहे हिंदी कार्यान्वयन के संबंध में विस्तार से बताया।

Bengaluru Edition
Feb 28, 2022 Page No. 2
Powered by : eReleGo.com

दक्षिण रेलवे के प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक रवि वल्लूरी ने किया संरक्षा निरीक्षण

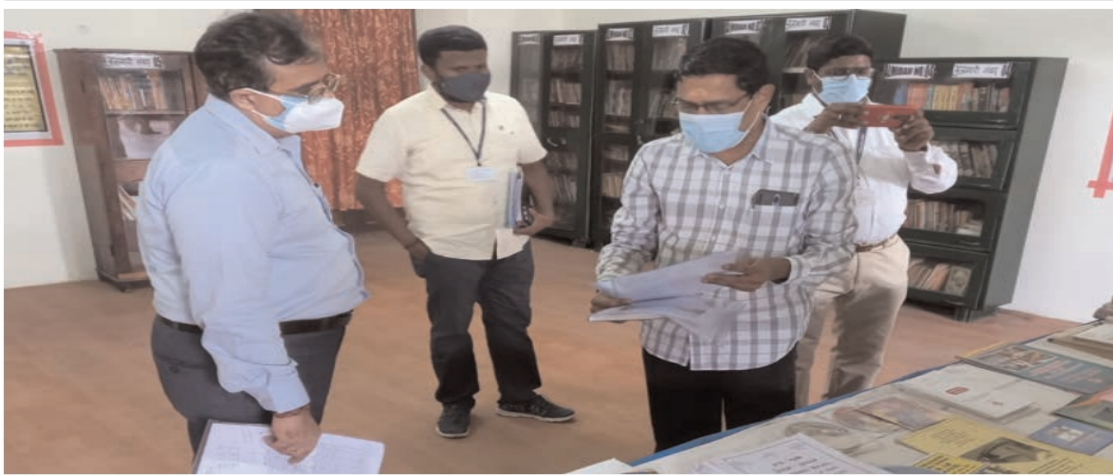
मदुरै @ पत्रिका दक्षिण रेलवे के प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक (पीसीसीएम) रवि वल्लूरी ने शुक्रवार को मदुरै जंक्शन पर हिंदी प्रदर्शनी और मैथिली शरण गुप्त नामक पुस्तकालय का संरक्षा निरीक्षण किया।

रवि वल्लूरी दक्षिण रेलवे के मुख्य राजभाषा अधिकारी का अतिरिक्त कार्यभार भी देख रहे हैं। इस मौके पर हिंदी विभाग ने कर्मचारियों द्वारा किये जाने वाले काम की प्रदर्शनी रखी गई। रवि वल्लूरी ने प्रदर्शनी के संवीक्षण के साथ-साथ हिंदी पुस्तकालय के अवलोकन भी किया। इस पुस्तकालय में करीब 2600 हिंदी की पुस्तकें हैं। निरीक्षण के बाद उन्होंने कहा इस पुस्तकालय की



पुस्तकालय में प्रदर्शित पुस्तकों का अवलोकन करते रवि वल्लूरी।

पुस्तकों की सूची नेट पर प्रदर्शित की जाए ताकि अधिकाधिक कर्मचारियों को आकर्षित किया जा सके। इस मौके पर राजभाषा अधिकारी श्रीनिवासन ने श्री रवि वल्लूरी को मदुरै मंडल में विभिन्न स्टेशनों पर किये जा रहे हिंदी कार्यान्वयन के संबंध में विस्तार से बताया।



मदुरै जंक्शन में हिंदी प्रदर्शनी और पुस्तकालय का निरीक्षण

मदुरै/दक्षिण भारत

मदुरै मंडल में दक्षिण रेलवे के प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक व दक्षिण रेलवे के मुख्य राजभाषा अधिकारी का अतिरिक्त कार्यभार संभाल रहे रवि वल्लूरी ने संरक्षा

निरीक्षण किया। उन्होंने हिंदी प्रदर्शनी के संवीक्षण के साथ-साथ हिंदी पुस्तकालय का निरीक्षण भी किया। ज्ञातव्य है कि मदुरै जंक्शन में मैथिलीशरण गुप्त नामकरण के हिंदी पुस्तकालय है। पुस्तकालय वाचनालय सुविधायुक्त है। विभिन्न

विधाओं की लगभग 2600 हिंदी किताबें हैं। इस मौके पर राजभाषा अधिकारी ए. श्रीनिवासन ने रवि वल्लूरी को मदुरै मंडल में विभिन्न स्टेशनों पर किये जा रहे हिंदी कार्यान्वयन के संबंध में विस्तार से बताया।